>

Title: Motion for the consideration of the Central Sanskrit Universities Bill, 2019 (Motion adopted and Bill passed).

मानव संसाधन विकास मंत्री (डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक): अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

> "कि संस्कृत में शिक्षण और अनुसंधान के लिए, संस्कृत संवर्धन के सर्व समावेशी क्रियाकलापों के विकास के लिए विश्वविद्यालयों की स्थापना और निगमन के लिए तथा उससे संबंधित या उसके आनुषंगिक विषयों का उपबंध करने वाले विधेयक पर विचार* किया जाए ।"

माननीय अध्यक्ष: माननीय मंत्री जी, क्या आप कुछ विषय रखना चाहते हैं?

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक: श्रीमन्, ये जो तीन महत्वपूर्ण संस्थान हैं, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान है, दूसरा श्री लाल बहादुर शास्त्री विद्यापीठ और तीसरा राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति है । आज इन बहुत ही महत्वपूर्ण संस्थानों, जिनका जन्म देश की आजादी के साथ-साथ हुआ था और बाद में इनको डीम्ड विश्वविद्यालयों का दर्जा दिया गया था । आज इन तीनों संस्थाओं को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा देने के लिए प्रस्ताव लाया गया है जैसा कि विदित है कि संस्कृत इस देश की आत्मा है । यह देश विश्व गुरू रहा है । विश्व गुरू होने के पीछे जो महत्वपूर्ण विद्या रही है, दर्शन रहा है, विचार रहा है, तो वह संस्कृत है, जिसको सबसे प्रचीनतम भाषा बोला और माना जाता है । संस्कृत में एक उक्ति रही है:

एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन: ।

स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षरेन्: पृथ्वियां सर्व मानवा: । ।

श्रीमन्, इस देश के अंदर तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे बहुत महत्वपूर्ण संस्थान थे, जहां पूरी दुनिया के लोग शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे । ज्ञान विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में यह देश पूरे विश्व में शिखर पर था । संस्कृत को हम अपनी आत्मा मानते हैं, भारत की आत्मा मानते हैं । संस्कृत का संबंध संस्कृति से है और संस्कृति का संबंध हमेशा संस्कारों से है ।

श्रीमन, वेदों को सबसे प्राचीनतम ग्रंथ माना गया है । जो संस्कृत है, उसकी जो भाषा है, उसके जो ग्रंथ हैं, जो उसका दर्शन है, जो उसका विचार है । श्रीमन, हमारा दर्शन-

अयं बन्धुरयंनेति गणना लघुचेतसाम्
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

पूरी दुनिया को हमने अपना परिवार माना है, यह हमारा विचार है, यह हमारा संस्कार है और उस संस्कार को जो हमारी संस्कृति है, उसको संस्कारों के रूप में हमने पूरी दुनिया को अपने परिवार के रूप में माना है । वसुधैव कुटुम्बकम की बात कही है । उस परिवार के लिए जो हमारा संस्कार रहा है, हमने हमेशा कहा है -

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ।

जब तक धरती पर एक भी इंसान दुखी होगा, तब तक मैं सुख का एहसास नहीं कर सकता हूं । इसलिए एक ओर हम सम् गच्छत्वम, सम् वद्धत्वम की बात करते हैं । हम साथ-साथ चलेंगे, साथ-साथ पुरुषार्थ करेंगे,

ॐ सह नाववतु ।
सह नौ भुनक्तु ।
सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हम साथ-साथ चलेंगे, साथ-साथ रहेंगे, साथ-साथ बोलेंगे और मिलकर के हर काम, हर पुरुषार्थ को हम साथ-साथ मिलकर के करेंगे, यह जो विचार है, यह जो दर्शन है, इसका उद्भव संस्कृत से होता है । इसलिए यह जो विचार है, जिसने पूरी दुनिया में भारत को शिखर पर पहुंचाया है, मुझे यह कहते हुए खुशी होती है कि आज दुनिया के लगभग सौ देशों के ढाई सौ विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जाती है । पूरी दुनिया में संस्कृत सदियों से पढ़ाई जाती है और मैं कहना चाहता हूं कि उत्तरी अमेरिका, आस्ट्रेलिया, यूरोप, ब्रिटेन, डेनमार्क, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, नीदरलैंड, स्वीडन, स्विट्जरलैंड, जापान और थाईलैंड का यदि मैं जिक्र करूं तो मैं गर्व से कह सकता हूं कि दो-तीन सौ साल से तमाम दुनिया के देश संस्कृत को पढ़ा रहे हैं और बड़े गौरव के साथ पढ़ा रहे हैं । जर्मनी में अकेले 1400 विद्यालय हैं, जो संस्कृत को पढ़ा रहे हैं और उसमें जो वेद, पुराण और उपनिषद् हैं, जो यहां के ग्रंथ है, आयुष वेद: आयुर्वेद:, श्रीमन, हमारे तन और मन के जो ग्रंथ हैं, जो संस्कृत के हमारे ग्रंथ हैं । पतंजलि का योग भी संस्कृत में ही है, सारी दुनिया आज जिसके पीछे खड़ी है और आयुष वेद: आयुर्वेद, जो आयु का विज्ञान है, उस आयुर्वेद के सभी ग्रंथ भी संस्कृत में हैं । इसलिए श्रीमन इस देश को जानना हो, इस देश के ज्ञान और विज्ञान को समझना हो और इसकी शिखरता को पहचानना हो तो बहुत जरूरी है कि संस्कृत आए । इसलिए यह तीन संस्थान, जो लम्बे समय से काम कर रहे हैं, अनुसंधान के क्षेत्र में ये तीनों संस्थान अलग-अलग करके काम कर रहे हैं । प्राचीन शास्त्र के संबंधों में आधारित शोध का कार्य कर रहे हैं राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दूसरा, वेद, वेदांग, ज्योतिष और वास्तुशास्त्र के रूप में लाल बहादुर शास्त्री विद्यापीठ डीम्ड यूनिवर्सिटी काम कर रही है, तीसरा संस्थान, भारतीय शास्त्रों एवं संगठन यंत्र आधारित शोध और विभिन्न प्राचीन दर्शन की पारम्परिक शास्त्रों के साथ काम कर रहे हैं । इसलिए ये तीनों संस्थान बहुत शीर्ष का काम कर रहे हैं । विज्ञान के साथ जब संस्कृत का ज्ञान जुड़ेगा तो एक बार यह देश विश्व में गुरू कहलाएगा, सब जगह ज्ञान और विज्ञान के अनुसंधान के साथ । इसलिए जो आज यह प्रस्ताव आ रहा है, यह सामान्य प्रस्ताव नहीं है । हो सकता है कि जिनको उस वैभव के बारे में जानकारी न हो, उनके मन में प्रश्न उठ सकते हैं, लेकिन इन तीनों विश्वविद्यालयों के बनने से उनके सारे प्रश्नों के समाधान होंगे ।

मैं सिर्फ कहना चाहता हूं कि मैक्स मूलर जी ने अपनी किताब में लिखा है कि आप भारत में हर जगह अपना श्रेष्ठ भूत और श्रेष्ठ भविष्य को पूरी सम्भावना के साथ देख सकते हैं । यदि आप चाहें तो प्राचीन युग की विशेषताओं को प्राप्त कर सकते हैं । आज की कोई भी समस्या जैसे सर्वशिक्षा हो, उच्च शिक्षा हो, विधि का संहिताकरण हो, वित्त हो, प्रजनन हो, निर्धन कानून हो या अन्य शिक्षण सामग्री, यानी कुछ भी जिसे आप समझना या सीखना चाहते हैं, वह भारत आपको एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला के साथ प्रदान कर सकता है जो अन्यत्र नहीं मिल सकता है । श्रीमान्, यह मैक्समुलर ने कहा है । उन्होंने यह कहा है कि संस्कृत जो दुनिया की सर्वाधिक सक्षम भाषा है । अभी इसको वैज्ञानिकों ने भी कहा है कि जो वैज्ञानिक भाषा है, जो बोली जाती है, वही उच्चारित होती है, जो उच्चारित होती है, वही लिखी जाती है । यदि दुनिया में कोई एक भाषा है, जो वैज्ञानिक भाषा है, तो वह संस्कृत भाषा है । इस बात को सारी दुनिया के वैज्ञानिकों ने सुनिश्चित किया है ।...(व्यवधान)

SHRIMATI KANIMOZHI KARUNANIDHI (THOOTHUKKUDI): Hon. Minister, are you a linguist? How can you say that Sanskrit is the greatest language? Who are you to say this? ...(*Interruptions*) You cannot say that ...(*Interruptions*)

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक : श्रीमान्, हमारी जो भारतीय भाषाएं हैं, उसमें हमारी तमिल है, तेलुगु है, वह भी श्रेष्ठ भाषाएं हैं ।...(व्यवधान) इसलिए, तमिल और तेलुगु भी संस्कृतनिष्ठ भाषाएं हैं, दोनों समान हैं । हमारी भारतीय भाषाएं बहुत श्रेष्ठ हैं । लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि यदि इसका वैभव नहीं होता, तो यह हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में नहीं पढ़ाई जाती । यदि इसका वैभव नहीं होता...(व्यवधान) जब आप बोलेंगी, तब मैं उसका जवाब जरूर दूंगा ।...(व्यवधान)

SHRI T. R. BAALU (SRIPERUMBUDUR): How many people have learnt Sanskrit? …(*Interruptions*)

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक : श्रीमान्, मैं कोशिश करूंगा कि प्रमाणों के साथ जवाब दूं ।…(व्यवधान) मैं इसकी कोशिश करूंगा । मैं यह कहना चाहता हूं कि हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, कंबोडिया यूनिवर्सिटी, शिकागो यूनिवर्सिटी, इंडियाना यूनिवर्सिटी, यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, एमोरी यूनिवर्सिटी, यदि मैं इन विश्वविद्यालयों में, जो कि दुनिया के शीर्ष के विश्वविद्यालय हैं, हम गर्व के साथ यह कह सकते हैं कि वे आज संस्कृत को पढ़ा रहे हैं और उसके गौरव को बढ़ा रहे हैं । मैं यह कहना चाहता हूं कि आज इसकी जरूरत है कि हम ज्ञान और विज्ञान को नवाचार के साथ आगे लेकर जाएं । हमारी जितनी भी भारतीय भाषाएं हैं, वे समृद्ध हैं । इसलिए, यह जो बिल आया है, इससे देश को श्रेष्ठ बनाने की दिशा में, जो हमारा प्राचीन विज्ञान और ज्ञान है, उसको नवाचार के साथ और नए अनुसंधान के साथ ऊपर उठाने और बढ़ाने के लिए यह बिल लाया गया है । इसलिए, मैं सबसे विनती करता हूं कि इस पर वे अपने विचार जरूर रखें और इस बिल को सर्वसम्मति से पास करके भारत के गौरव को बढ़ाने की कोशिश करें ।

माननीय अध्यक्ष : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ:

> "कि संस्कृत में शिक्षण और अनुसंधान के लिए, संस्कृत संवर्धन के सर्व समावेशी क्रियाकलापों के विकास के लिए विश्वविद्यालयों की स्थापना और निगमन के लिए तथा उससे संबंधित या उसके आनुषंगिक विषयों का उपबंध करने वाले विधेयक

SHRI BENNY BEHANAN (CHALAKUDY): Hon. Speaker, Sir, thank you for giving me this opportunity to speak on this Bill.

The declared objective of this legislation is to form a Central University for Sanskrit by elevating three existing deemed universities to be Universities. We hope that this will provide better opportunities for concentrating on higher studies in different disciplines of our ancient wisdom and also for meaningful research activities. Hence, the attempt is laudable.

15.58 hrs (Dr. (Prof.) Kirit Premjibhai Solanki, *in the Chair*)

There are 18 Sanskrit Universities in India spread across 14 States. The first Sanskrit University in India, Sampurnanand Sanskrit University was established in 1791 in Varanasi, Uttar Pradesh. The most recent Sanskrit University was established in Haryana in the name of the legendary Indian poet and the author of Ramayana, Maharshi Valmiki. Ramayana is considered as the greatest literary masterpiece of India and was written in Sanskrit.

As all of us are aware, Sanskrit is the repository of our ancient knowledge and the world outside honours this land for that language and the culture enshrined in it. Unfortunately, this great treasure was confined for a long time to the elite belonging to the upper layers of the society. The majority of the population were denied access to that language or to that culture. History tells us that it was a Mughal Prince Dara Shikoh who brought it to the outside world by translating the Upanishads into the Persian language. This paved the way for the West to know about our culture. The discovery of Sanskrit by the outside world in the 18^{th} and 19^{th} centuries revolutionised the thought process of that era. Sanskrit was the source for the emergence of new systems like linguistics and other Indological studies.

16.00 hrs

We are thankful to the pioneering efforts of these foreign scholars who fixed Sanskrit in the global knowledge system. Thanks to their untiring efforts, there are Departments of Sanskrit Studies in many of the Universities, as the hon. Minister said, the world over. We hope that the new Central University will co-ordinate the research activities in these centres and collaborate for new ventures in new areas.

Various manuscripts which are treasures of ancient Indian knowledge and medicine including Ayurveda are being actively researched there. In this scenario, where even foreign countries are spending resources to extract this knowledge, India where all these originated from, falls short in many aspects. Unearthing this information, translating these two forms where it can be used, is the need of the hour.

I would like to share one important point with you in this context. We should not mix up language with religion. All languages are great in their own way; all religions are also great. We should respect all of them but desist from mixing the two or identify any language with any particular religion.

Some instances around us, to say the least, are painful. Recently, a brilliant scholar in Sanskrit, duly selected to the post of Professor was not allowed to join in one of our reputed Universities merely because he was a Muslim. After being humiliated continuously, he bowed out and resigned. This House would like to know the action taken by the Government against those who threatened the scholar from entering the campus.

Sri Shankaracharya University of Sanskrit is situated in my constituency. It is in Kalady which is the birth place of Adi Shankaracharya. It is in the name of Adi Sankara, the great eighth century philosopher who achieved the pinnacle of ultimate knowledge and wisdom.

Dr. M.C. Dileep Kumar, the previous Vice-Chancellor and the University Syndicate had submitted two proposals to the Government. One was to establish an International Study Centre for Sanskrit research establishing tie-ups with other universities including international universities to bridge the gap between Sanskrit education and mainstream education. The second proposal was to declare Sri Shankaracharya University as the nodal agency for propagation of Sanskrit studies in South India.

I would urge upon the Parliament and the concerned Ministry to kindly reconsider these proposals. It is also my humble request to convert Sri Shankaracharya University into a Central University considering the importance of this great language and the need to impart and propagate it as much as possible.

Sir, I invite you to the land of Sri Shankaracharya, Kerala. We have a rich tradition of Sanskrit learning. We encourage students belonging to all religions and castes to study Sanskrit and they occupy high positions in the society. You will be surprised to know that a Brahmin woman teaches Arabic and Urdu in our school. The former Vice-Chancellor, Dr. Paulose, is a scholar in Sanskrit. This is our secular fabric! I request that the Central University for Sanskrit should uphold this lofty principle of secularism enshrined in our Constitution and create an atmosphere of social harmony in its campus.

I would like to draw your attention to one more point. Functioning of higher centres of learning in our country under the present Government, be it IIT or Central University or any other institution, is far from satisfactory. Dalit students coming from rural areas face several kinds of discrimination. This House would like to get an assurance that this social imbalance will not be repeated in the new University and reservation principles will be strictly followed in the recruitment of teachers in this University. This should not be a centre for creating Ekalavyas who are forced to cut off their thumbs to please their teachers.

Sir, I would like to conclude by quoting a sloka by Adi Shankaracharya:

"Jnano devathu kaivalyam"

It means, liberation is only through knowledge. There are vast resources of knowledge yet to be unearthed in Sanskrit. So, let us strive to preserve, propagate and explore. Before concluding, I would like to say that this is a great idea. I welcome the Central Sanskrit Universities Bill, 2019 but I would say that this Government has a hidden agenda in everything. …(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON : Kindly conclude.

… (*Interruptions*)

SHRI BENNY BEHANAN : Do not try to saffronise the university and the education policy. It is the hidden agenda of BJP to saffronise the education policy. …(*Interruptions*) So, please do not do that.

HON. CHAIRPERSON: Thank you very much.

Now, Dr. Satyapal Singh.

डॉ. सत्यपाल सिंह (बागपत): महोदय, मैं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय विधेयक के समर्थन में खड़ा हुआ हूँ । सबसे पहले व्यक्तिगत संतोष की बात यह है कि पिछली बार जब देश के यशस्वी प्रधान मंत्री मोदी जी की कृपा से मैं मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री बना था, तो यह केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाने का प्रस्ताव मेरे द्वारा ही रखा गया था और इसीलिए मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से यह बहुत संतोष की बात है । मैं हमारे मानव संसाधन विकास मंत्री का बहुत अभिनन्दन करता हूँ, उनका बड़ा आभार व्यक्त करता हूँ कि इस बिल को जल्दी से जल्दी लाए हैं । इस देश के सभी संस्कृति प्रेमियों का, सारी दुनिया के संस्कृत प्रेमियों को मैं बधाई देता हूँ और उनका भी अभिनन्दन करता हूँ । महोदय, हम लोग संस्कृत को देव भाषा मानते हैं । दैवीय भाषा, अपौरुषेय भाषा है और कहते हैं कि देव भाषा का जो मूल है, वह वेद है । इसलिए मैं आपकी अनुमति से अपनी बात वेद मंत्र से शुरू करना चाहता हूँ ।

ऊँ शन्नो मित्र: शं वरुण: । शन्नो भवति अर्यमा: । । शन्नो इन्द्रो बृहस्पति शन्नो विष्णु विष्णु उरुक्रम: । नमो ब्रह्मणो नमस्ते वायो । त्वमेय प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतम् वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि । तद्मावतु तद्वक्तारमतु अवतु माम अवतु वक्तारम्॥ ऊँ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥

महोदय, मैं भारत के संविधान से अपनी बात शुरू करना चाहता हूँ । आप ध्यान सुनेंगे तो बहुत बातें नहीं मालूम चलेंगी आज । भारत के संविधान का पहला अनुच्छेद यह कहता है, उसको अंग्रेजी में कहते हैं- इंडिया देट इज भारत । जो भारत है उसके कारण इंडिया बना है । भारत देट इज नॉट इंडिया । भारत के कारण इंडिया बना है । यह भारत क्यों? भारत शब्द कहां से आया? देश का नाम कहां से आया? कहते हैं कि भारत दो शब्दों से बना है- भा + रत । 'भा' कहते हैं- प्रकाश को, ज्ञान को, रोशनी को और रत कहते हैं- जहाँ व्याप्त हो । जिस देश के अंदर से धरती के ऊपर ज्ञान व्याप्त हो, ज्ञान की रोशनी चलती हो, उसका नाम भारत है । इसलिए इस देश के अंदर भारत के संविधान निर्माताओं ने बड़ा गहरा शोध किया होगा । बहुत लोगों ने शायद ध्यान नहीं दिया होगा, आपकी इस कुर्सी के ऊपर, आसन के ऊपर संस्कृत में लिखा हुआ है- धर्मचक्र प्रवर्तनाय । धर्मचक्र के परिवर्तन के लिए हम लोग संसद में यहां बैठे हुए हैं । अधीर रंजन जी को मैं याद दिलाना चाहता हूं, वर्ष 1950 में इस देश में सबसे पहले जो शिक्षा मंत्री बने, उस जमाने में शिक्षा मंत्री कहते थे कि संस्कृत का मंत्रालय होता था । मैंने यह भी एक प्रस्ताव दिया था, जब मैं राज्य मंत्री था, इस मंत्रालय का नाम मानव संसाधन विकास मंत्रालय नहीं होना चाहिए । क्योंकि मानव केवल एक रिर्सोस नहीं, एक संसाधन नहीं है, उससे बहुत कुछ बढ़कर के है । हमारे माननीय मंत्री जी यहाँ बैठे हैं, मेरा विश्वास है कि उनके नेतृत्व में जल्दी ही इस एचआरडी मिनिस्ट्री का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय किया जाएगा ।

महोदय, मैं यह कह रहा था कि वर्ष 1950 में, अक्टूबर में इस देश के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने उस समय के सभी प्रदेशों के मुख्य सचिवों को एक पत्र लिखा और उन्होंने कहा कि हमारा देश जिस बात के

कारण प्रसिद्ध था, विश्व गुरू था । अंग्रेजों के कारण, लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति के कारण यह देश अपने मूल से भटक गया । हमारे बच्चों में संस्कारों की कमी आ गई और इसलिए अगर अपने बच्चों में दोबारा संस्कार लाने हैं, तो उनको क्या सिखाना है, उन्होंने कहा था, संस्कृत में एक शब्द है, पत्र अंग्रेजी में है, लेकिन उन्होंने लिखा था, संस्कृत में एक शब्द है, जिसे 'धर्म' कहते हैं । यह 'धर्म' सब जगह पढ़ाया जाना चाहिए । 'धर्म' का मतलब रिलिजन नहीं है, दुर्भाग्य की बात यह है कि हम लोगों ने 'धर्म' को रिलिजन में बदल दिया । विदेशी लोगों के प्रभाव में आकर हमारे विद्वान कहने लगे कि 'धर्म' का मतलब रिलिजन है । 'धर्मो धार्यते प्रजाः', इसलिए संसद में अलग-अलग जगह पर संस्कृत में वेदों के वाक्य लिखे हुए हैं ताकि हम उनसे प्ररेणा ले सकें । 'धर्मो धार्यते प्रजाः' भी लिखा हुआ है, जिससे देश का रक्षण हो, जिससे शरीर का रक्षण हो, जिससे शरीर को धारण किया जा सके, समाज को धारण किया जा सके, उसी का नाम धर्म होता है ।

महोदय, मैं कह रहा था कि दुनिया की बड़ी-बड़ी सभ्यताएं हैं । इतिहास इस बात का गवाह है कि दुनिया की सभ्यताओं ने ईंट, पत्थर, मार्बल और स्टीलों से, किसी ने महल बनाए, किसी ने किले बनाए, किसी ने पिरामिड बनाए, लेकिन समय के थपेड़ों ने सबको धराशायी कर दिया । रेगिस्तान की हवाओं ने पिरामिड को गिरा दिया, पिरामिड को ध्वस्त कर दिया । दुनिया की बहुत सभ्यताएं हैं । मिस्र, रोम, यूनान, बेबीलोनिया, मेसोपोटामिया, माया सभ्यता सब खत्म हो गईं, लेकिन भारत की संस्कृति बची रही । इसका कारण क्या था? अल्लामा इकबाल ने यह बात कही थी :

"मिस्र रोम, सब मिट गए जहां से,
लेकिन बाकी है नामो निशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर ए जहां हमारा"

वह बात क्या थी? वह कौन सी बात थी, जिसके कारण भारत की संस्कृति बची रही? मेरा यह कहना है कि यह मात्र केवल उस भारतीय संस्कृति के कारण, उस संस्कृत के कारण, जहाँ संस्कृत है, वहाँ हमारी संस्कृति है, जहाँ संस्कृत है, वहीं संस्कार है, जहाँ संस्कृत है, वहीं प्रगति और उन्नति है । इसलिए किसी भौतिक, किसी अनित पदार्थों के महल, मंदिर, किलों के ऊपर, किसी पैगम्बर, भगवान, किसी महापुरुष के ऊपर भारतीय संस्कृति का अस्तित्व नहीं है । भारतीय संस्कृति का अस्तित्व नित्य बातों के कारण है, जिन्हें हमारे ऋषियों ने कहा है, उन शब्दों के ऊपर है, जिन्हें मैंने ईश्वर प्रदत्त, दैवीय वाक्य कहा था । जो भाषा परमेश्वर से प्रारंभ हुई । हम यह मानते हैं कि लाखों करोड़ों वर्षों से इस देश के ऋषि यह कहते रहे कि इस भाषा का मूल परमात्मा से आया है, भगवान से आया है । पिछले लगभग 200 वर्षों से, जब से अंग्रेज इस देश के अंदर आए, तब से दुनिया ने इस बात पर डाउट करना शुरू कर दिया, शक होना शुरू हो गया । ऐसा बोलते हैं कि आदमी ने अपनी भाषा पेड़-पौधों से सीखी, पक्षियों को बोलते हुए सुना और देखा, जानवरों को चिल्लाते हुए सुनकर और देखकर सीखी । आज भी अगर लाखों, करोड़ों शब्दों को कोई आकाश में फेंक दे, तो कोई साहित्य तैयार होने वाला नहीं है । न शेक्सपियर का लिटरेचर तैयार होने वाला है, न कालिदास का ग्रंथ तैयार होगा । आज के जमाने में जब आदमी इतना उन्नत है, आज भी अगर आदमी के बच्चे को जंगल में छोड़ दिया जाए, पैदा होते ही छोटे बच्चे को जंगल में छोड़ दिया जाए, वह वहाँ बोलना भी नहीं सीख पाएगा, चलना भी नहीं सीख पाएगा, पढ़ने की बात तो अलग है । हम कहते हैं कि हमने जानवरों को देखकर भाषा सीख ली । इस बात को ही दूर करने के लिए हमें संस्कृत विश्वविद्यालयों की जरूरत है । ऐसे केंद्रीय विश्वविद्यालय इस देश के अंदर बनें, जो इन पाखण्डों को, इस फाल्स प्रोपेगैन्डा को दूर कर सकें । इसके लिए हमें केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय चाहिए । मैं यह कह रहा था कि हमारा जो साहित्य है, हमारी जो संस्कृति है, हमारी यह संस्कृत भाषा ईश्वर से चली है । ये ईश्वर से चली है, इसलिए पांच हजार वर्ष से पहले भगवान वेदव्यास ने यह बात कही थी

"अनादि निधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा ।
आदौ वेदमयी दिव्य यतः सर्वाः प्रवृत्तयः ॥"

हमारी जो भाषा है, यह वेद की भाषा है । यह केवल ईश्वर से चली है । यह अनादि है, यह निन्दन-निंदनीय से दूर है । इसी से दुनिया की सारी भाषाएं चली हैं । दुनिया की जितनी भाषाएं हैं, चाहे भारत की भाषाएं हों या दुनिया की भाषाएं हों, उन सबके मूल में संस्कृत है । लोग इसको लाखों-करोड़ों वर्षों से मानते हुए आए हैं । ...(व्यवधान) मैं सब बातों पर आऊंगा । इसलिए हम लोगों ने कहा कि यह वेदों से निकला है । वेद की शिक्षा सार्वभौमिक है, सबके लिए कल्याणकारी है । चारों वेदों के अंदर कहीं भी किसी देश का नाम नहीं है, केवल हिन्दुस्तान, भारत के लिए है । कहीं भी यह नहीं आया कि यह भाषा किसी जाति विशेष के लिए है । यह भाषा सारी दुनिया के लिए है, यूनिवर्सल है । इसलिए हम लोग कहते हैं जिस दिन

भारत से वेद खत्म हो जाएंगे, उस दिन भारत की हस्ती खत्म हो जाएगी, जिस दिन संस्कृत खत्म हो जाएगी, उस दिन से वेद खत्म हो जाएंगे । जब तक इस देश के अंदर वेदों का पठन-पाठन और संस्कृत का पठन-पाठन चलता रहा तब तक यह देश विश्व गुरु रहा, विश्व विजयी रहा । विद्या में, वीरता में, वैभव में इस देश का कोई सानी नहीं रहा । इसलिए हम सारी दुनिया में कहते थे कि अगर सबसे प्राचीन कोई संस्कृति है, वह भारत की संस्कृत है, वह वेदों की संस्कृति है । इसलिए हम कहते थे- "सा प्रथमा संसकृति विश्ववारा" । सारी दुनिया के अंदर यह फैली संस्कृति थी । केवल भारतवर्ष के लिए नहीं थी । हमारे मंत्री जी कह रहे थे, मुझे याद आ गई उनकी बात-

"एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन: ।
स्वं स्वं चरित्रां शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवा:॥"

सारी दुनिया के लोग जिनको जीवन के बारे में जीवन का मर्म समझना है, केवल जन्म से नहीं, जन्म पूर्व से लेकर मृत्युपर्यंत जितने भी विधान दुनिया के अंदर हैं, यान-विज्ञान जितने विज्ञान दुनिया के अंदर हैं, अगर उनको समझना है, अगर चरित्र की शिक्षा लेनी है तो भारत के ऋषियों के चरणों में आओ और वहां से कुछ सीखकर जाओ । पहले कितने विश्वविद्यालय थे, केवल नालन्दा और तक्षशिला नहीं थे । अगर मैं गिनाने लगूं तो 20-25 तो मुझे याद है । विक्रमशिला, काशी, वल्लभी, ओदंतपुरी, रत्नागिरी, नवदीप, विक्रमपुरा, धारा, कांची, पता नहीं कितने विश्वविद्यालय इस देश के अंदर चलते थे । ...(व्यवधान)

माननीय सभापति : सत्यपाल जी आप बहुत अच्छा बोल रहे हैं, मगर पार्टी के बहुत सारे लोगों को भी बोलना है ।

डॉ. सत्यपाल सिंह : आज तो पहले मुझे बोलना है, और कोई बोले

न बोले । ...(व्यवधान) मैं कह रहा था कि यह बात केवल पांच हजार वर्ष पहले की नहीं, यह लाखों-करोड़ों वर्षों तक चलता रहा । कुछ लोग यह भी कहते हैं कि क्या भारतीय संस्कृति पांच हजार वर्ष पुरानी है? मैं उनको कहना चाहता हूं कि जो ऐसा बोलते हैं, मुझे लगता है वे कम पढ़े-लिखे लोग हैं । आप में से बहुत लोगों ने कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक संकल्प कराया होगा । चाहे तमिलनाडु की बात हो, केरल की बात हो या त्रिवेन्द्रम की बात हो, सभी जगह पंडित संकल्प मंत्र कराते हैं, सभी संकल्प मंत्र पढ़ते हैं । संकल्प मंत्र में यह पढ़ते हैं कि इस दुनिया को बने हुए कितने दिन हो गए । मैं उसको पढ़कर भी आपको बता दूंगा । भर्तृहरि जी ने कहा है-

"अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम् ।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः । ।"

सारी दुनिया के अंदर संस्कृत भाषा का ज्ञान-विज्ञान फैला हुआ है । ...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : इसका ट्रांसलेशन कीजिए । ...(व्यवधान)

डॉ. सत्यपाल सिंह : मैं इसका ट्रांसलेशन कर रहा हूं । ...(व्यवधान) अधीर रंजन जी इसका ट्रांसलेशन यही है कि संस्कृत भाषा अनादि है, इसको किसी आदमी ने तैयार नहीं किया है । यह 'ब्रह्म का शब्दत' है । हम इसे अक्षर कहते हैं अक्षर से शब्द बनता है । अक्षर का मतलब यह है कि जो कभी नाश नहीं होता । शब्द परमानेंट हैं, शब्द इटरनल है, सनातन है । आज हम लोग टीवी देखते हैं, रेडियो सुनते हैं, मोबाइल फोन देखते हैं, इन सब में शब्द परमानेंट है, क्योंकि शब्द भी साउण्ड है, एनर्जी है और एनर्जी कभी खत्म नहीं होती, उसके केवल रूप बदलते हैं, इसलिए शब्द कभी खत्म नहीं होते हैं ।

श्री भागीरथ चौधरी (अजमेर): सभापति महोदय, माननीय सदस्य ने एक बात कही है । ...(व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, आप बैठिए ।

डॉ. सत्यपाल सिंह : सभापति जी, मैं कहना चाहता हूं...(व्यवधान)

माननीय सभापति : सत्यपाल जी, आप एक मिनट में अपनी बात कन्क्लूड कीजिए । आपको बोलते हुए 14 मिनट हो गए हैं ।

डॉ. सत्यपाल सिंह : सभापति जी, एक मिनट में नहीं पूरा होगा, पांच मिनट में भी नही होगा । …(व्यवधान)

सभापति जी, मैं कहना चाहता हूं कि जब इस देश में अंग्रेज आए, उन्होंने इस प्रकार का दुष्प्रचार शुरू किया कि संस्कृत भी विदेशी है । जैसे आर्य लोग बाहर से आए हैं, आर्य लोग यहां के मूल निवासी नहीं थे, वे संस्कृत लेकर आए, इसलिए संस्कृत भी विदेशी भाषा है । इसका मूल यूरोपियन है और हमारे लोग इस बात को सुनकर खुश हो गए । … (व्यवधान) हमारे लोग इस बात को सुनकर बहुत खुश होते हैं । उन्होंने कहा कि यहां आदिवासी लोग रहते थे, द्रविड़ लोग रहते थे, इस देश का सबसे पुराना नाम आर्यावर्त मिलता है, हम सब लोग आर्य हैं और द्रविड़ विद्वानों को कहते हैं, वे अलग नहीं हैं । …(व्यवधान) वे सभी विद्वान हैं । इस देश ने चार बड़ी गलतियां कीं । …(व्यवधान) द्रविड़ को विद्वान कहते हैं, इंटेलेक्चुअल्स, बुद्धिजीव कहते हैं और सब आर्यावर्त में रहते हैं । …(व्यवधान) इस देश ने चार बड़ी गलतियां कीं । पहली गलती, हमारे माननीय गृह मंत्री जी उस दिन बोल रहे थे कि रिलीजन के नाम पर, सम्प्रदायों के नाम पर हमने देश का बंटवारा कर दिया । गलती नम्बर दो, भाषाओं के नाम पर राज्यों का बंटवारा कर दिया । जातियों और उपजातियों के नाम पर समाज का बंटवारा कर दिया, लेकिन जो सबसे बड़ी गलती की, सबसे बड़ी गलती यह थी कि अंग्रेजों ने जो शिक्षा पद्धति चालू की, अंग्रेज जो विचार लाए, उसे हमने ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया । अब दुर्भाग्य है कि …(व्यवधान) मैक्समूलर कहता था ।…(व्यवधान) अभी मुझे बोलने दीजिए, बाद में मुझसे पूछ लेना ।…(व्यवधान) देखिए, आप लॉर्ड मैकाले का भाषण पढ़िए, लाइब्रेरी में किताब है । …(व्यवधान) मैं एजुकेशन पॉलिसी की बात कह रहा हूं ।

माननीय सभापति: सत्यपाल जी, आप अपनी बात कहिए और अब समाप्त कीजिए ।

डॉ. सत्यपाल सिंह : सभापति जी, मैं यह कह रहा हूं कि लॉर्ड मैकाले जो एजुकेशन पॉलिसी लेकर आए, उसमें उन्होंने कहा था कि English education would train up a class of persons, Indian in blood and colour, but English in taste, in opinions, in morals, and in intellect. वे देखने में तो भारतीय नजर आएंगे, लेकिन सोच में, रहन-सहन में, वे अंग्रेज दिखाई देंगे । यह बात कभी-कभी दिखाई देती है, कभी-कभी मैं संसद में भी देखता हूं । उनकी सोच इस प्रकार हो गई है कि वे एकदम विदेशियों जैसी बात करते हैं । …(व्यवधान) आप मुझे बताइए कि क्या अमेरिका के लोग अपने बच्चों को किसी रशियन इतिहासकार द्वारा लिखा हुआ इतिहास पढ़ाएंगे? क्या इंग्लैंड के अन्दर जर्मन इतिहासकारों द्वारा लिखा हुआ इतिहास पढ़ाएंगे? क्या जर्मनी वाले अपने बच्चों को किसी इंग्लिश इतिहासकार का लिखा हुआ इतिहास पढ़ाएंगे, लेकिन यह इस देश का दुर्भाग्य है कि अंग्रेजों का लिखा हुआ इतिहास हमारे देश में, हमारे विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है । आज 70 वर्षों बाद भी हम इसे दूर नहीं कर पाए । यह हमारे संस्कृत विश्वविद्यालयों के लिए भी एक चैलेंज है और इसे दूर करना चाहिए । हमारी रिसर्च विदेशों का समर्थन करती रही, जिसे हम संस्कृत में कहते हैं – उच्छिस्ट भोजी । हम उनका झूठा खाते रहे । हमारे विद्वान जो यूनीवर्सिटी में बैठे थे, बोले कि संस्कृत तो मृतप्राय: भाषा हो गई, कभी इस देश की भाषा ही नहीं रही । हम इस तरह की बातें करने लगे । मैं दो-तीन उदाहरण इस बात के लिए देना चाहता हूं कि क्या कभी संस्कृत इस देश की भाषा थी? रामायण, महाभारत के बारे में सबने सुना है । सीता जी भी संस्कृत बोलती थीं । हनुमान जी भी संस्कृत बोलते थे । हनुमान जी के बारे में कहा जाता है कि वे चारों वेदों के विद्वान थे । आदि शंकराचार्य केरल के थे । माहिष्मति नगरी मध्य प्रदेश के अंदर थी । वे वहां जाते हैं और श्री मंडन मिश्र उस समय के बहुत बड़े विद्वान थे ।…(व्यवधान) मैं मान लेता हूं कि वे बिहार से थे । माहिष्मति नगरी के अंदर मंडन मिश्र का पता नदियों से पानी भरती महिलाओं को पूछते हैं कि क्या आप मंडन मिश्र का पता बता सकती हैं । वे पानी के घड़े भरकर ले जा रही हैं और कहती हैं कि

"स्वत: प्रमाणं परत: प्रमाणं कीरांगना यत्र गिरागिरन्ति ।
द्वारस्थ नीडान्तर-सन्निरुद्धा जानीहि तन्मंडन पण्डितौक: । "

जहां मैना द्वार पर बैठ कर स्वत: प्रमाणित कर रही हो, वहां जाकर पता चला कि जो घर मिलेगा, वह मंडन मिश्र का घर होगा । हमारी महिलाएं भी संस्कृत बोलती थीं । 27 तो ऋषिकाएं थीं । इस देश के अंदर जिसे ऋषि, ऋषि, ऋषि, जिसे कहते हैं, संस्कृत में उच्चारण करने वाली 27 ऋषिकाएं लोपा, मुद्रा, गार्गी आदि कितने नाम हैं । मैं एक उदाहरण देना

चाहता हूं । 12वीं शताब्दी में श्री हर्ष नाम के संस्कृत के बहुत बड़े कवि हुए उन्होंने नैषधीम चरित्र नाम का एक नाटक लिखा । दमयन्ती के स्वयंवर की बात हो रही है । दमयन्ती के स्वयंवर के लिए सारी दुनिया से राजकुमार आते हैं । उन्होंने लिखा कि वे आपस में अलग-अलग भाषाएं बोलते थे, लेकिन जब दुनिया से लोग आए, तो वे आपस में कैसे बात करें? इसके लिए श्री हर्ष कहते हैं कि

"अन्योन्य भाषा नवबोध भीते संस्कृति अमाभि व्यवहार

वत्सु दिग्भ्य: समतेषु नृपेषु तेषु सौवर्गवर्गो न जनैर चिह्नि"

उन्हें डर था कि हमारी भाषा कोई समझेगा या नहीं, इसलिए वे आपस में संस्कृत बोलते हैं । सारी दुनिया के लोग संस्कृत बोलते थे । सप्तद्वीपा वसुमति । सातों द्वीपों में लोग संस्कृत बोलते थे । महाभाष्य महाभारत से पहले हुआ है । पतंजलि की लिखी हुई किताब है, इस किताब का नाम महाभाष्य है । पतंजलि ने योग सूत्र लिखा है । योग सूत्र पर सबसे पहली व्याख्या वेदव्यास ने की है । वेदव्यास महाभारत के जमाने में थे, इसका मतलब पतंजलि 5 हजार साल पहले थे । उन्होंने उस जमाने में लिखा कि सारी दुनिया के अंदर एक ही भाषा चलती थी और उस भाषा का नाम संस्कृत था ।

महोदय, अभी दो महीने पहले मैं कडपा, आंध्रप्रदेश में गया था । हमारा बीजेपी का सम्पर्क अभियान था । हम किसी के परिवार में गए । उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के लोग हिंदी को हमारे ऊपर थोप रहे हैं । मैंने कहा कि आप हिंदी को थोपने की बात करते हो, लेकिन विदेशी भाषा अंग्रेजी से बड़ा प्यार करते हो । अंग्रेजी भाषा का तो कोई विरोध नहीं करता है । यह बात सुनकर वे चुप हो गए । मैंने उनसे कहा कि हिंदी की बात आपने कही, लेकिन क्या आप संस्कृत को स्वीकार करेंगे? उन्होंने कहा कि हिन्दी को स्वीकार नहीं करेंगे, लेकिन संस्कृत को स्वीकार कर लेंगे ।... (व्यवधान) आप संस्कृत सीखने के फायदे सुनें ।

महोदय, मैं संस्कृत पढ़ने के फायदे बताना चाहता हूं । सबसे पहले मैं कहना चाहता हूं कि सारी भाषाओं की जननी संस्कृत है । हमारे यहां कहते हैं कि अलग-अलग भाषाएं जैसे हिंदी, मराठी, बांग्ला, गुजराती, ओड़िया आदि भाषाएं संस्कृत से निकली हैं । हम जो साउथ इंडियन भाषाएं बोलते हैं, तेलुगु, तमिल, मलयालम, कन्नड़ इन भाषाओं की पुरानी व्याकरण देख लीजिए । मलयालम के अंदर केरल के लोगों को मालूम होगा कि संस्कृत के शब्द भी हैं । प्रेमचन्द्रन जी, मलयालम में 70 परसेंट अभी भी संस्कृत के शब्द हैं । तमिल के अंदर 30 परसेंट संस्कृत के शब्द हैं । तेलुगु और कन्नड़ में 50 से 60 परसेंट संस्कृत के शब्द हैं । मराठी, तेलुगु और कन्नड़ के व्याकरण आरम्भ में संस्कृत में ही लिखे गए । अब मैं किताबों के नाम बताता हूं । मराठी में सबसे पहले जो व्याकरण लिखा गया, उस किताब का नाम है- पंचवर्तिका । कन्नड़ में सबसे पहले जो व्याकरण की किताब लिखी गई, उसका नाम है-शब्दमणिदर्पण, लेखक काशीराज जी हैं । तेलुगु में जो सबसे पहले व्याकरण की किताब आई, उसका नाम है-आन्ध्रशब्दार्थचिंतामणि, जिसके लेखक आदिकवि नान्नया जी हैं ।

अब मैं अंग्रेजी की बात कर रहा हूं । अंग्रेजी तो सभी जानते हैं । हम नाम बोलते हैं, अंग्रेजी में नेम कहते हैं । पथ पढ़ लो या पाथ पढ़ लो । आकर्षण पढ़ लो या अट्रैक्शन पढ़ लो । शोक कह लो या शॉक कह लो । अंत कह लो या एंड कह लो । स्रोत कह लो या सोर्स कह लो । तकनीकी कह लो या टैक्नोलॉजी कह लो । मैं कह रहा हूं कि संस्कृत से ही अंग्रेजी में शब्द गए हैं । अंग्रेजी की भी जननी संस्कृत है ।...(व्यवधान) मैं यह कह रहा था कि हम संस्कृत पढ़ाकर अपने बच्चों को संस्कार देना चाहते हैं । संस्कृत हमारे पूर्वजों की भाषा है । यह शुद्धतम है, साइंटिफिक है । दुनिया में चाहे कोई भी आदमी हो, शुद्धतम खाना खाना चाहता है, प्योर से प्योर हवा में रहना चाहता है, शुद्ध पानी पीना चाहता है, तो क्या हम हमारे पूर्वजों की शुद्ध भाषा को इस्तेमाल नहीं करेंगे? हम उसी अपने पूर्वजों की भाषा का ही इस्तेमाल करेंगे ।... (व्यवधान)

बच्चे को सबसे ज्यादा आनंद अपनी मां की गोद में आता है । चाहे गरीब का बच्चा हो या अमीर का बच्चा हो, सबसे ज्यादा आनंद उसको अपनी मां की गोद में आता है । मैं कहता हूं कि हमारे पूर्वजों, हमारे देवों की भाषा, दुनिया की सब भाषाओं की जननी संस्कृत है । जो संस्कृत पढ़ेगा, आनंद तो उसी को आएगा । जो नहीं पढ़ेगा, उसको नहीं आएगा ।... (व्यवधान)

मैं कहता हूं कि सब प्रकार का ज्ञान, विज्ञान और कला इसके अंदर है । इतनी समृद्ध भाषा दुनिया के अंदर कोई नहीं है । बताने के लिए मैं बहुत कुछ कह सकता हूं । चाहे कृषि शास्त्र है, अर्थशास्त्र है, काम शास्त्र है, चिकित्सा शास्त्र है या धर्मशास्त्र है, ज्योतिष, गणित, विमान विद्या, भौतिक शास्त्र या रसायन शास्त्र जितने भी है, दुनिया कैसे बनी, साइंस बता सकती है । दुनिया क्यों बनी, यह साइंस नहीं बता सकती है ।...(व्यवधान) यह संस्कृत बताती है कि दुनिया क्यों बनी? यह हमारे दर्शन बताते हैं । इस धरती पर मानव कब आया? इसको बताने के लिए संकल्प मंत्र पढ़ता हूं:

"अद्य श्री ब्रहमणोअहिन द्वितीय परार्धे,

श्री श्वेत वाराह कल्पै,

वैवस्त मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे,

युगे कलियुगे कलि प्रथम चरणे,

भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखंडे,

आर्यावर्तान्तर्गतैकदेशे अमुक नाम्ने ग्रामे ।"

संस्कृत में जो विज्ञान है, बहुत लोगों को इसमें कंफ्यूजन है ।...(व्यवधान) माननीय सभापति जी, मैं दो मिनट में अपनी बात समाप्त कर रहा हूं ।

एरोनॉटिक्स स्पेस की मैं एक बात बताना चाहता हूं । वर्ष 1965 में चीन ने, तिब्बत के ऊपर कब्जा कर लिया था, लेकिन ल्हासा में उनको संस्कृत के चैप्टर मिले, किताब का नाम नहीं मिला । मैं आपको किताब का नाम बता रहा हूं । एक अमेरिकन प्रोफेसर ने एक किताब लिखी है- एंटी ग्रेविटी हैंड बुक । किताब का जो राइटर है, उनका नाम है-डेविड हैचर चाइल्ड्रैस । उन्होंने एक कहानी यह दी है कि वर्ष 1965 में ल्हासा के अंदर संस्कृत के कुछ पेज मिले तो उन्होंने इसका ट्रांसलेशन करने के लिए पंजाब यूनिवर्सिटी में चंडीगढ़ में एक अमेरिकन प्रोफेसर रुथ रैना नाम की जो आई हुई थीं, उनको ट्रांसलेशन करने के लिए भेजा । उसे ट्रांसलेशन करने के बाद इस प्रोफेसर रूथ रेना ने एक कॉपी चाइनीज को भेजी और एक कॉपी हमारे इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस बेंगलुरू को भेजी । दस सालों के बाद हमारे इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस के प्रोफेसरों ने कहा कि हमारे पास यह संस्कृत में आई है । हमें इसमें ज्यादा दम नजर नहीं आता है । यह यंत्र सर्वस्व का भाग नहीं है, लेकिन दस सालों के बाद वर्ष 1975 में चाइना ने सैटेलाइट से जानकारी प्राप्त कर उसको सही कहा । हमें यह मालूम नहीं होता । वर्ष 1985 में यह पुस्तक प्रकाशित हुई है – एंटी ग्रैविटी हैंड बुक । उसके अंदर उस घटना का जिक्र किया गया है कि किस प्रकार से भारत के लोगों ने उसको नकार दिया, क्योंकि हम अंग्रेजों के गुलाम हो चुके थे । हम मानसिक रूप से भी गुलाम थे । हम लोगों ने संस्कृत को महत्ता नहीं दी, इसलिए चाइना हम लोगों से आगे निकल गया ।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : मैं अगले वक्ता का नाम बोलता हूं, आप अपनी बात समाप्त कीजिए ।

...(व्यवधान)

डॉ. सत्यपाल सिंह : सभापति महोदय, हमारी जो सेन्ट्रल यूनिवर्सिटीज बन रही हैं, उनको किस प्रकार का रिसर्च करना चाहिए? बाहर के विद्वान फाल्स प्रोपगंडा फैला रहे हैं । एक किताब वर्ष 1907 में आई थी ।...(व्यवधान) हिन्दुत्व के बारे में अमेरिका एवं अन्य जगहों पर स्टडी चल रही है, वे किस प्रकार से फाल्स प्रोपगंडा का प्रचार दुनिया में कर रहे हैं । सेंट्रल यूनिवर्सिटीज का सबसे बड़ा यह लक्ष्य होना चाहिए कि फाल्स प्रोपगंडा को कैसे खत्म किया जाए ।...(व्यवधान)

सभापति महोदय, जिस समय स्वामी विरजानंद के पास स्वामी दयानंद पढ़ने गए तो स्वामी विरजानंद ने उसे पूछा कि क्या पढ़ कर आये हो, तो उन्होंने मनुष्य रचित ग्रंथों का नाम बताया, तब उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें तब पढ़ाऊंगा, जब तुम सब कुछ भूल कर आओ । मैं केवल ऋषि ग्रंथ पढ़ाऊंगा, तब उन्होंने सभी किताबें यमुना में फेंक दी ।

इस सदन के माध्यम से मैं संस्कृत के प्रोफेसरों को यह संदेश देना चाहता हूँ कि जो केन्द्रीय यूनिवर्सिटीज बन रही हैं, जो आज तक 70 वर्षों से चलता रहा है, उसको भूल कर ऋषि ग्रंथ, वेद-वेदांग पर रिसर्च करना होगा ।...(व्यवधान)

*SHRI A. RAJA (NILGIRIS): Hon. Chairman Sir, Vanakkam. I thank you for giving me an opportunity to speak on the Central Sanskrit Universities Bill, 2019. After being elected to Lok Sabha for the fifth time and having served as Union Minister three times, I got this opportunity to speak in my mother tongue for the first time in this House which is necessitated.

While taking part in a discussion on a Bill, time will be allotted to a political party as per the number of MPs it has in the House. I too have agreed to that. As the current discussion is going on a different angle, instead of going with head count of MPs or party strength, I request Hon. Chairman Sir to allot equal time to the opposition parties to express their views. This Bill aims to boost Post Graduate, Doctoral, and Post Doctoral education in the field of Sanskrit and Shastraic education.

Hon. Chairman Sir, I wish to state that myself and my party Dravida Munnetra Kazhagam, DMK are not against any particular language. DMK will not accept a language dominating the other, on the basis of claiming its supremacy. DMK will never ever allow a language to supress another language. We are not against the activities undertaken by the Government for promoting Sanskrit. At the same time, the views expressed in this august House should not try to make a big mistake in the political history. In India, we have two schools of thought. Historians have even accepted this.

Sir C.P. Ramaswamy Iyer who was the Diwan of Travancore Kingdom, served as Vice-Chancellor of Banaras Hindu University. When Shri Jawaharlal Nehru constituted the National Integration Council for integration of princely states, he made Sir C.P. Ramaswamy Iyer to head that Council. He had expertise in several fields including Sanskrit. He said, “the two components of Indian culture are based on Sanskrit and Dravidian languages”. He said that the culture of this country is based on two schools of thought one being Sanskrit and other being the Dravidian languages. Both are said to be different according to him. I don’t have time to trace its origin. I totally disagree with the statement made by Hon Minister saying Tamil is derived from Sanskrit.

Perarignar Anna spoke in Parliament saying “I belong to the Dravidian community. As I claim to be a Dravidian, I am not against a Gujarati or a Marathi. The reason being that we have strong, varied and worthy credentials to give to the world. We can give them with our individual identity to the world.” You should agree to the fact that in India, we have two schools of thought; one is Aryan culture based on Sanskrit and the other one is Dravidian culture based on south Indian languages like Tamil, Telugu and Malayalam. With due respect, I want to say one thing here. “If you say Sanskrit is the language of Gods and only it is understood by Gods, if other languages are not understood by God, then I don’t want such a God to be worshipped. We are ready to throw away that God.” This was stated by the great philosopher and visionary Thanthai Periyar. Therefore we are atheists or theists not because of our principles but because of the views expressed by you; and we are forced to take a stand.

You should understand that we want to bring reform in the society. Sanskrit is one of the languages belonging to the Indo-European language group. Similarly Tamil and other languages belong to the Dravidian group of languages. Both these languages have special characteristics. I don’t deny this. You should analyse with an open mind as to why and where we have defects. I don’t deny the fact that Sanskrit is a classical language. You have Vedas, Puranas, Agamas, Bhagavad Gita, Epics like Mahabharat and Ramayana, in

Sanskrit. The age of Sanskrit, even with a liberal mind, can be found as not more than 2500 years. This is not my statement. This was stated by the Historians. If you see Tamil, it has a very rich heritage. We had the First Sangam period that dates back to 4500 years ago. This First Sangam was formed by King Kaichinavazhuthi. It consisted of 450 poets. All books published during this period other than Muthunaarai, Muthukurugu have been washed away by floods or devoured by sea. This is history based on the stone inscriptions. I am not talking about the language of Gods or as a belief. You should understand one thing. It is not appreciable for the hon. MPs to speak on the basis of some beliefs. My learned colleague and former IPS Officer Satyapal Singh also spoke here. I should say belief is something different. During my childhood, when I was studying, my parents had hung a photograph of Lord Shiva wearing a crescent moon on his head. I believed that moon was on the head of Lord Shiva. It is not a rational thought. It is a belief. But in the year 1969 when Armstrong landed on moon and kept his left leg forward, I could not accept the story of Lord Shiva. Therefore belief is something different. When Science takes over, you have to accept that scientific truth. That is the real human value. You have all these books for Sanskrit language. If you see for Tamil, First Sangam period was before 4500 years; Second Sangam before 3500 years. This second Sangam was founded by King Vendayachezhiyan. *Tholkaappiyam* is the book. …(*Interruptions*)

माननीय सभापति : पार्टी के हिसाब से आपका टाइम खत्म हो गया है । आप एक मिनट में स्पीच खत्म कीजिए ।

…(व्यवधान)

माननीय सभापति: अन्य सभी सदस्यगण बैठ जाइए ।

***SHRI A RAJA :** During 1st, 2nd and 3rd centuries, we got books like *Ettuthogai, Pathuppaattu* and *Pathinenkeezhkanakku.* I can say with pride that Hon. Prime Minister when he visits a foreign country he quotes the Tamil saying "Yaadhum Oore; Yaavarum KeLir". Everyplace in this world is my native place; every other person is my relative. Our Prime Minister says this. This saying is taken from *Ettuthogai* and *Pathuppaattu* of the First Sangam period. I can cite another difference. You say Sanskrit is supreme. Chatur Varnam Maayashistam. I created four Varnas. This is Sanskrit. But in Tamil, the *Thirukkural* couplet says, *"PirappOkkum ella uyirkkum"* which means all are born equal. *Sthree Janma Paava Karma.* Being born as a woman is a sin. This is a Sanskrit slogan. But a Tamil poem says, *'Pennin Perunthakka Yaavula'* which means there is nothing praiseworthy than a woman. This is Tirukkural couplet.

HON. CHAIRPERSON : Mr. Raja, you have exceeded your time.

… (*Interruptions*)

SHRI A. RAJA : No, Sir. …(*Interruptions*)

SHRI T. R. BAALU : Sir, you please allow him. …(*Interruptions*) He will conclude. …(*Interruptions*) He knows how to behave in the House. …(*Interruptions*)

***SHRI A RAJA :** In the Statement of Objects and Reasons, it is stated that it will also enhance the opportunities of imparting education in the field of Indian philosophy. You are stating that the Indian philosophical thought only pertains to Sanskrit and nothing else. This has been stated in this Bill. This is the hidden agenda of the present Government. We cannot accept this. Section 5 of this Bill states that you will be spreading science, human science, social science and discipline through Sanskrit. It is surprising for me. If this Sanskrit language is really a language of Gods, if it is a language of Indian sub-continent, I want to ask the same question raised by my friend in this House, that why have you denied a person who has been

appointed as Assistant Professor in the Banaras Hindu University after getting expertise in Sanskrit ?. If it is so, you mean that Sanskrit belongs to Hindutva. In that case we will never accept that language. You can help make a language survive. There is nothing wrong. This Sanskrit language is at the verge of extinction. During the 1961 Census, it was found that only 2000 persons spoke Sanskrit.

माननीय सभापति : हमने बिजनेस अडवाइजरी कमेटी में जो समय तय किया है, उसके हिसाब से आपको ज्यादा समय दिया है, आप कनक्लूड कीजिए ।

…(व्यवधान)

SHRI T. R. BAALU : The BAC has allotted two hours for it. He has got time. …(*Interruptions*)

डॉ. निशिकांत दुबे (गोड्डा): सर, यह तमिल और संस्कृत की लड़ाई नहीं है । …(व्यवधान)

माननीय सभापति : आप बैठ जाइए । मिस्टर राजा, आप कनक्लूड कीजिए ।

***SHRI A. RAJA :** We have reached a point where the researchers are questioning whether this Sanskrit language is a surviving or a dead language. There is a debate going on. Sheldon Pollock and John Snelling, both language researchers, have declared Sanskrit as a dead language. Another expert says it is a dying language. I am in total agreement with your good intention in reviving a dying language. During 2011-12 you have given Rs.150 crore rupees for promotion of Sanskrit. Whereas you have given only a meagre amount of Rs.12 crore to all the classical languages including Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam and Odia. During the year 2014, you have forcibly shifted 70,000 students to Sanskrit who had opted for German language. We have 41 Universities in the country. Out of which six are language Universities. Out of these six Central Universities six, three are for Sanskrit, One for English, One for Urdu and One for Hindi. But none of the University is for Tamil language.

HON. CHAIRPERSON: Please conclude now.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Thank you very much. The next speaker is Prof. Sougata Ray.

… (*Interruptions*)

SHRI T. R. BAALU : Hon. Parliamentary Affairs Minister, he is concluding. …(*Interruptions*)

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEAVY INDUSTRIES AND PUBLIC ENTERPRISES (SHRI ARJUN RAM MEGHWAL): Mr Raja Ji, You please conclude. My only intervention is that is not a clash between Sanskrit and Tamil or with other Indian languages. We want to set up a Sanskrit University. If you want, it should be set up for Tamil language, Government is ready for that. Hon. Minister may reply. It is not a clash between Tamil and Sanskrit. You must clarify or speak about the Bill.

SHRI T. R. BAALU : Hon. Parliamentary Affairs Minister, he is concluding. …(*Interruptions*)

***SHRI A. RAJA :** This Government intentionally is engaged in wrongdoing. Hon. Prime Minister says that genetic science, cosmetic surgery, are from Vedic period and through Sanskrit. Who will believe this? Hon. Prime Minister while addressing a Seminar at the Indian Science Congress said that space ships and air transport existed during Vedic period. Everything should have scientific credentials.

माननीय सभापति : प्रो. सौगत राय, आप बोलिए । आपका वक्तव्य अंकित होगा, आप शुरू कीजिए ।

…(व्यवधान)

***SHRI A. RAJA :** My request is that do not propagate false beliefs and superstitions in the name of Sanskrit language. Let the classical Tamil language be given prominence. Thank you.

प्रो. सौगत राय (दमदम) : सभापति महोदय, मुझे आपने बोलने का मौका दिया है, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं । आप बहुत बड़े सर्जन हैं । आप मेरे भाषण में कटौती मत कीजिएगा । आप बहुत अच्छी सर्जरी करते हैं ।…(व्यवधान)

माननीय सभापति : प्रो. साहब, आप सभी लोगों ने ही नियम बनाए हैं, तो नियम के ही हिसाब से चलना है । कुछ इधर-उधर चलता है, लेकिन आप अपना भाषण समय के अंदर समाप्त कीजिएगा ।

…(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय : महोदय, मैं पहली बार सरकार के लाए हुए कानून का समर्थन करता हूं । केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय विधेयक, 2019, यह बिल पिछले चुनाव के बाद तैयार हुआ था, यानी वर्ष 2019 के शुरू में, उस समय चुनाव आ गए थे, इसलिए यह पास नहीं हो पाया था । अभी निशंक जी, नए एचआरडी मिनिस्टर इसको लेकर आए हैं । इसमें तीन नए संस्कृत विश्वविद्यालय बनेंगे । तीन विश्वविद्यालय मिलकर एक बना हुआ है ।…(व्यवधान) बना नहीं है, आप सुनिए । एक डीम्ड यूनिवर्सिटी थी । दो दिल्ली में हैं और एक तिरुपति में है । यह अभी फुल-फ्लेज्ड सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी बनेगी, मैं इसका समर्थन करता हूं । महोदय, आपको शायद यह जानकारी है कि देश में 41 केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैं ।

SHRI SUDIP BANDYOPADHYAY (KOLKATA UTTAR): Sir, he is a professor of physics but he is talking about Sanskrit.

PROF. SAUGATA ROY : Why not! There is no clash between Sanskrit and Physics. I will come to that later. Sir, I may remind you that when the first atomic bomb explosion experiment was carried out, Dr. Robert Oppenheimer, a Nuclear Physicist, was the Chief of the Project. When the mushroom arose above the desert of Texas, he quoted the Gita and said, “Brighter than a thousand Suns”. In the Gita, they described the Great Almighty.

मैं इसका समर्थन करता हूं । हमारे देश में 3 डीम्ड यूनिवर्सिटी थीं और 12 स्टेट यूनिवर्सिटीज़ हैं । उसमें हमारे बंगाल में भी एक संस्कृत कालेज यूनिवर्सिटी है । पहली बार 3 यूनिवर्सिटीज़ को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा मिला है । इसका पूरा समर्थन करना चाहिए । दिल्ली में डीम्ड यूनिवर्सिटी है, उसके काफी कैंपस हैं । फर्स्ट शेड्यूल में दिया गया है, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान, ओडिशा, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, त्रिपुरा और उत्तराखंड में उसका कैंपस है । इस बिल का समर्थन करना चाहिए । संस्कृत की पढ़ाई को आगे बढ़ाना चाहिए । पोस्ट ग्रैजुएट डॉक्टोरल रिसर्च होनी चाहिए । लेकिन मैं संस्कृत के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूं । यह साफ है कि हिन्दुस्तान में दो family of classical languages हैं । एक है, संस्कृत, हमारे हिन्दी, बांग्ला सब संस्कृत से आए हैं और दूसरा है, The Dravidian Group of Languages, जिसका प्रधान तमिल भाषा है । सर, तमिल भी पांच हजार साल पुरानी भाषा है । I

would ask that like for Sanskrit, the Government should set up a Central University for Tamil also which is a classical Indian language. कोई झगड़ा नहीं है । दो अलग स्ट्रीम हैं, एक संस्कृत है, एक तमिल है, द्रविडियन लैंग्वेज हैं । दोनों ही अलग से बढ़ें, यह हम चाहते हैं ।

सर, संस्कृत में बहुत सारा ज्ञान है । सबसे बड़ा ज्ञान तो वेदों में है – ऋगवेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्वेद । उसके बाद उपनिषद हैं । हमारे रविन्द्र नाथ टैगोर उपनिषद से बहुत प्रभावित हुए थे । उसके बाद गीता, रामायण और महाभारत हैं । ये सब भी संस्कृत भाषा में बने हुए हैं । यही हमारे हिन्दुस्तान का हैरिटेज है । हिन्दू हो या मुस्लिम हो, ये सब लोगों का हैरिटेज है । तो मैं दुखी होता हूं, जब बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में एक मुसलमान संस्कृत का प्रोफेसर हुआ, उसके खिलाफ प्रदर्शन हुआ । हिन्दुस्तान के हैरिटेज में सबका हिस्सा है । हिन्दू, मुसलमान, सिख, क्रिश्चियन सभी लोगों को इसमें मौका मिलना चाहिए कि कोई भी संस्कृत पढ़े और कोई भी संस्कृत पढ़ाएं । इसमें कोई आपत्ति नहीं है । …(व्यवधान) सर, हमारी संस्कृत में पुराना ज्ञान भी है । चरक और सुश्रुता जो हमारी पुरानी मैडिकल साइंस है, चरक सहिंता में है । … (व्यवधान) मैंने तो बोला है कि अगर रॉबर्ट ओपनहाइमर गीता कोट कर सकते हैं, जो दुनिया के सबसे बड़े न्यूक्लियर फिज़िसिस्ट हैं, तो सब लोग कर सकते हैं । …(व्यवधान) सर, हमारे इस बिल के बारे में बोलने के पहले मेरा एक प्रस्ताव मंत्री जी को यह है कि इनमें से एक यूनिविर्सिटी का नाम ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के नाम पर कीजिए । उनके दो सौ साल पूरे हो रहे हैं । ईश्वर चन्द्र विद्यासागर सबसे बड़े संस्कृत स्कॉलर थे । वे व्याकरण कौमुदी, संस्कृत ग्रामर के बारे में बनाए थे, पहले तो पाणिनी का ग्रामर थी, बहुत कठिन ग्रामर थी । उसको सीधा कर के ईश्वर चन्द्र विद्यासागर बनाए थे । सर, एक ठो मिसअण्डरस्टैंडिंग हुई, चुनाव के पहले बीजेपी का एक जुलूस निकला था, सुदीप जी की कंस्टिट्यूएंसी में निकला था, अमित शाह जी उसमें थे । उन लोगों ने क्या किया कि विद्यासागर जी की एक मूर्ति तोड़ दी थी । …(व्यवधान)

माननीय सभापति : आप विषय पर आइए ।

…(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय : जुलूस से कोई भी किया होगा । …(व्यवधान)

माननीय सभापति : आप जुलूस जाने दो, आप संस्कृत पर आइए ।

…(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय : तो ममता बनर्जी जी ने फिर वहां पर विद्यासागर की मूर्ति लगाई, लेकिन जो मिसअंडरस्टैंडिंग हुई है, वह दूर हो जाएगी, अगर मंत्री जी विद्यासागर जी के नाम पर एक यूनिवर्सिटी का नाम रखें । …(व्यवधान)

माननीय सभापति : आपका समय समाप्त हुआ है, आप जल्दी से अपना विषय रख दो ।

…(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय : सर, हम तो कुछ खराब नहीं बोले हैं । …(व्यवधान) विद्यासागर जी की मूर्ति तोड़ने में आप लोग शामिल थे । …(व्यवधान) यह दुखद बात है । …(व्यवधान) आपने ईंटा मारा था । …(व्यवधान)

माननीय सभापति : आप अपने विषय पर आइए । आपका समय समाप्त हो रहा है, फिर मैं घंटी बजाउंगा ।

…(व्यवधान)

DR. NISHIKANT DUBEY (GODDA): Sir, he is misleading the House.

प्रो. सौगत राय : सर, आप एक सर्जन हैं, इसको रोकिए । …(व्यवधान)

माननीय सभापति : मगर आप विषय पर आइए । You are a Professor.

…(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय : सर, मैं तो कहता हूँ कि विद्यासागर जी के नाम पर एक संस्कृत विश्वविद्यालय का नाम होना चाहिए । … (व्यवधान)

माननीय सभापति: आप अपने विषय पर आइए, वह मैटर हो गया है, अब आगे बढ़िए ।

…(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय : सर, बोलने के बाद मैं कहता हूँ कि बंगाल में संस्कृत की चर्चा बहुत अच्छी है । हमारे कोलकाता में जाधवपुर में विश्वभारती में पोस्ट ग्रैजुएट विभाग है । लेकिन नीचे संस्कृत नहीं पढ़ाया जाता है । मंत्री ने उत्तर दिया कि केन्द्रीय विद्यालय में छह से आठ तक संस्कृत पढ़ाई जाती है । मैं चाहता हूँ कि आप सभी विश्वविद्यालयों में कम से कम तीन साल संस्कृत पढ़ाई जाए, यह कानून बनाइए । संस्कृत की चर्चा कम होती है ।

17.00 hrs

संस्कृत अगर नहीं रहेगी तो हिन्दुस्तान का हेरिटेज नहीं रहेगा । संस्कृत भाषा छात्रों में फैलाने की जरूरत है । क्लास 9 से 11 तक संस्कृत एक अलग सब्जेक्ट के रूप में पढ़ाई जाएगी । माध्यमिक और उच्च माध्यमिक में भी पढ़ाने के लिए मंत्री जी सारे देश में एक डायरेक्शन दें, यह मेरा आपसे नम्र निवेदन है । मैं छोटा सा भाषण देकर अपनी बात समाप्त करता हूँ । सर, मैंने बचपन से संस्कृत पढ़ी है, मैं अभी भी जिन्दगी में, जो गीता का श्लोक सीखा था, उसी को लेकर चलता हूँ । लोग जब कहते हैं कि आप लोक सभा में इतना चिल्लाते हो तो क्या मिलता है? मैं बोलता हूँ कि कुछ मिलने के लिए मैं ये बातें नहीं उठाता हूँ- 'कर्मण्ये वाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन' । यह मैंने गीता से सीखा है । हमारे यहां जब कोई निकट आदमी गुजर जाता है तो मैं वहाँ जाकर बोलता हूँ-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि । तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-न्यन्यानि संयाति नवानि देही ।

हमारे मुल्क में जब इतना सारा हल्ला होता है, आज भी असम में आग जल रही है । …(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON : Kindly conclude.

प्रो. सौगत राय : सर, दो मिनट दीजिए ।

माननीय सभापति : आप डीविएट होते हो ।

…(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय : सर, दो मिनट दीजिए ।

माननीय सभापति : नौ मिनट हो चुके हैं । आप आधे मिनट में कनक्लूड कीजिए ।

…(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय : सर, आप गीता की बातें सुनिए । आप डॉक्टर हैं, आप सुनिए ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।

धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥

माननीय सभापति : प्रोफेसर साहब बहुत-बहुत धन्यवाद ।

…(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय : सर, मैं आशा करता हूं कि हिन्दुस्तान की हालत खराब होने से बचाने के लिए कोई न कोई आएगा, जो हिन्दुस्तान को बचाएगा । जैसे बुद्ध आए थे, गांधी जी आए थे ।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : थैंक यू ।

डॉ. बीसेट्टी वेंकट सत्यावती ।

...(व्यवधान)

DR. BEESETTI VENKATA SATYAVATHI (ANAKAPALLE) : Thank you, Chairperson Sir, for letting me present my party's views on the Central Sanskrit Universities Bill, 2019.

माननीय सभापति : अभी प्रोफेसर साहब का रिकार्ड में नहीं जाएगा । मैडम, आप बोलिये ।

...(व्यवधान) *

DR. BEESETTI VENKATA SATYAVATHI : Sir, Vedas were written in Sanskrit. Sushruta Samhita and Charaka Samhita, one of the most important medical treatises in ancient history were written in Sanskrit. ... (*Interruptions*)

माननीय सभापति : प्रोफेसर साहब आपका रिकार्ड में नहीं जाएगा । You have spoken for more than ten minutes. मैडम, आप चालू रखिए ।

...(व्यवधान) *

DR. BEESETTI VENKATA SATYAVATHI : In fact, Hindu religious ceremonies are impossible without the recitation of *mantras* in Sanskrit. Yet, Sanskrit is not our link language. Sanskrit grammar is highly developed, rigid and mathematically dense. Ancient scholar Panini's book 'Ashtadhyayi' is one of the finest works in Sanskrit grammar. Scholars like Patanjali associated grammar with spirituality and yoga sutras.

Sanskrit was a truly universal and integrating language, spoken not only by Hindus but also by Jains and Buddhists. Sanskrit is one of the official languages of the country. Sanskrit has been used to create beautiful poetry, extraordinary literary works and remarkable scientific discovery. Such a rich language should be studied and researched.

As per the provisions of the Bill, three Sanskrit deemed universities which are currently functioning in the country will be converted into Central Universities, namely, Rashtriya Sanskrit Sansthan at New Delhi, Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha at New Delhi, and Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha at Tirupati. On behalf of our Party, YRCP, and on behalf of the people of Andhra Pradesh, especially people of Tirupati, I would like to thank the Government, especially the HRD Minister, for upgrading the Tirupati-based Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha into a Central University.

This has been a long-standing demand of Sanskrit scholars and academia, and I once again congratulate the Government for converting the three deemed-to-be universities into Central universities to make them a seat of Sanskrit learning of national and international repute.

As we all know, there are 45 Central Universities in India, and currently, 40 universities are functioning under the supervision of the Ministry of Human Resource Development.

There is an urgent and a dire need to help the current generation of students understand the great language and heritage of Sanskrit. The first and authentic description of Indian boundaries is available only in old Sanskrit literature. No one can imagine India without Sanskrit. But, in spite of many institutions of Sanskrit in the country, at present, the condition of Sanskrit language is dismal and is not known to be a language of common man.

It is important to highlight here that the relation between Sanskrit language and Indian languages, scheduled and non-scheduled, is symbiotic in nature and as a result development of Sanskrit means development of other languages also.

In addition to that, utilitarian thoughts for our value systems like, "Satyameva Jayate", "Vasudhaiva Kutumbakam", etc. are taken from ancient books and were written in Sanskrit only.

The ancient scriptures also, Sir, are source of great knowledge and by following the morals contained therein, India can become the world leader in near future. But, for this, there should be basic understanding of Sanskrit amongst the common people. This is only possible when there shall be use of Sanskrit language in research and development of computer science, traditional science, mathematics and different social sciences.

17.07 hrs (Shri Bhartruhari Mahtab *in the Chair*)

Sir, establishing a Central Sanskrit University will give Sanskrit language the prestige that it rightly deserves. Additionally, it will give the university a degree of autonomy to carry out its functions.

In conclusion, I would like to say that Sanskrit is a culturally and historically rich language whose importance is declining in the modern times. Establishing a Central University for Sanskrit research will help in preserving and propagating this beautiful language.

Before concluding, here is a divine blessing, in Sanskrit, from Vedas for the entire universe, and I quote:

काले वर्षतु पर्जन्य: पृथिवी सस्यशालिनी ।
देशोयं क्षोभ रहित: सज्जना सन्तु निर्भया॥
अपुत्र पुत्रिन सन्तु पुत्रिन सन्तु पौत्रिण: ।
अधना: सधना: सन्तु जीवन्तु शारद: शतम्॥
स्वस्ति प्राजाभ्य: परिपालयन्ताम् नयायेन मार्गेण महीं महीशा: ।
गोब्राह्मणेभ्यश्शुभमसतु नित्य: लोका: समस्ता: सुखिनो भवन्तु॥

धन्यवाद ।

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा): महोदय, आपने मुझे केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय विधेयक, 2019 पर चर्चा में भाग लेने की अनुमति दी, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद ।

महोदय, उच्च शिक्षा की दृष्टि से सरकार ने काफी अच्छा और सराहनीय निर्णय लिया है । मैं माननीय मंत्री जी को इस बिल को लाने के लिए बधाई देता हूँ और उनको धन्यवाद देता हूँ ।

देश की पहली संस्कृत सेंट्रल यूनिवर्सिटी के लिए वित्त मंत्रालय, नीति आयोग एवं कानून मंत्रालय की मंजूरी के बाद मानव संसाधन विकास मंत्रालय यह प्रस्ताव लेकर आया है । इससे वर्तमान में तीन डीम्ड-टू-बी संस्कृत यूनिवर्सिटीज को सेंट्रल यूनिवर्सिटी का दर्जा मिल रहा है । ये तीन संस्कृत यूनिवर्सिटी हैं- राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली, जिसकी स्थापना वर्ष 1970 में हुई, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृति विद्यापीठ, दिल्ली, जिसकी स्थापना वर्ष 1962 में हुई और राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना वर्ष 1961 में तिरूपति में हुई । ये तीनों संस्थान केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय बन जाएंगे । महोदय, इससे संस्कृत को बढ़ावा मिलेगा । संस्कृत हमारे देश की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है । माननीय सत्यपाल जी ने जो बातें कही हैं, मैं उसका समर्थन करता हूं । उन्होंने जो बात संसद में कही है, उसे सभी को याद रखना चाहिए । हम लोग संस्कृत के बिना नहीं चल सकते हैं । अगर हमारे देश में कुछ भी आधारित है तो वह संस्कृत के बदौलत ही है । अभी तिरूपति की माननीय सदस्या बोल रही थीं । उन्होंने भी बहुत अच्छी बात कही है । संस्कृत हमारे देश की प्राचीनतम भाषा है । हमारे शास्त्र, ग्रंथ भी इसी भाषा में लिखे हुए हैं । भारत के हर कोने में संस्कृत भाषा की पढ़ाई और शिक्षा के प्रचार-प्रसार का कार्य चलेगा । अब संस्कृत भाषा की पहचान को दुनिया भर में प्रचारित करने में काफी सहायता मिलेगी ।

महोदय, इससे संस्कृत और धर्म ग्रंथ संबंधी शिक्षा के क्षेत्र में ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट, शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा भी मिलेगा । इससे बेहतर संकाय सदस्य मिलेंगे । विदेशी छात्र, संस्कृत विद्वान और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के विदेशी संकाय सदस्य को आकर्षित करने में सहायता मिलेगी । पूरे विश्व में वैश्विक विश्वविद्यालयों से अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में सहायता भी मिलेगी । भारतीय दर्शन, योग, आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षा देने के लिए अवसरों में वृद्धि करने में भी सहायता मिलेगी । देश भर में सभी संस्कृत कॉलेजों में लगभग 709 लेक्चरर्स के पद रिक्त हैं । इस पर भी माननीय मंत्री जी ध्यान देंगे ।

महोदय, इसी क्रम में, मैं माननीय मंत्री जी से एक और चीज जानना चाहता हूं कि सभी राज्यों में करीब 12 संस्कृत विश्वविद्यालय हैं । वे काफी पुराने भी है । वहां से संस्कृत भाषा की पढ़ाई और प्रचार-प्रसार का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है । बिहार राज्य के दरभंगा में वर्ष 1922 में कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी । वहां करीब 364 अध्यापक कार्यरत हैं और विद्यार्थियों की संख्या 10,265 हैं । अब माननीय मंत्री जी से मेरा प्रश्न यह है कि क्या इस विश्वविद्यालय को भी केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाने के लिए विचार किया जा रहा है? पूरे देश में कुल 1013 शिक्षकों की जरूरत है, जिसमें 364 शिक्षकों की जरूरत कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय में है । मैं आपको बताता हूं कि आज वहां 10,265 बच्चे पढ़ रहे हैं । आप इसको भी मत छोड़िए । इसके लिए मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा । उत्तरी बिहार में मिथिलांचल के काफी लोग संस्कृत बोलते हैं और आज भी लोग संस्कृत में इंटरेस्ट लेते हैं । मैं आपसे निवेदन करूंगा कि बिहार में जो कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना हुई है, उसको भी केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया जाए, यही मेरा आपसे विनती है । आप जो भी केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोल रहे हैं, उनमें कैम्पस की भी व्यवस्था करनी चाहिए । मैं सरकार से मांग करता हूं कि इसी बिल में ही कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय को भी सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी का दर्जा दिया जाए । मैं सरकार से यही मांग करता हूं और इस बिल का समर्थन करता हूं । बहुत-बहुत धन्यवाद ।

SHRI ARVIND SAWANT (MUMBAI SOUTH): Hon. Chairperson, Sir, Shri Hemant Patil will speak from the Shiv Sena Party.

DR. RAJASHREE MALLICK (JAGATSINGHPUR): Thank you, hon. Chairperson.

First of all, I would like to inform the august House that I strongly support this Bill. As all of us know, Sanskrit is a language of ancient India with a history of 3,500 years. Sanskrit is called the mother of all languages. Many nations have also agreed with that. Most of their words have been derived from Sanskrit. It is found that the Sanskrit language has 96 words for a single meaning, namely, 'love'. This tells that it is a language of love, humanity, peace and tranquillity.

It is the primary liturgical language of Hinduism and the predominant language of most of the works of Hindu philosophy as well as some of the principle texts of Buddism and Jainism. The Upanishads, Vedas, Mahabharata, Bhagavad Gita and Ramayana are written in Sanskrit language. We all know eminent persons like Mahakavi Kalidas, Jaidev, Vyasadev, Sarala Das Panini, Aryabhatta and Valmiki worked in Sanskrit.

The Government is promoting Sanskrit language at all levels, *i.e.,* schools, colleges and universities in the country. Sanskrit is taught as the third language to all students of classes 6 to 8 of Kendriya Vidyalayas across the country. The facilities and option to study Sanskrit is also provided to all students from class IX onwards at Kendriya Vidyalayas. The NCERT also organises orientation programme for the promotion of language education in various States including Uttar Pradesh.

As we know, there are about 120 universities in the country which offer Sanskrit as a subject of language and also it is offered by 760 colleges in the country. There are 15 Sanskrit universities, of which, three are deemed universities, namely, Rashtriya Sanskrit Sansthan, Delhi; Sri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha, New Delhi; and the Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha, Tirupati. They are fully funded by the Central Government and 12 such universities are funded by the State Governments.

There are also 1000 traditional Sanskrit colleges affiliated to these universities with about 10 lakh students. There are 41 central universities in the country at present. When there are already two language specific central universities – The English and Foreign Language University and the Maulana Azad National Urdu University at Hyderabad, I strongly demand a central university for Sanskrit. The Ministry of Human Resource Development has also initiated a proposal to turn three deemed universities imparting education in Sanskrit into central universities to make them seat of Sanskrit learning of national and international repute.

Hence, I heartily and strongly support this initiation of the Government in this regard.

***SHRI HEMANT PATIL (HINGOLI) :** Hon. Chairperson Sir, Thank you very much for allowing me to speak on the Central Sanskrit Universities Bill, 2019. I rise to support this bill. The person who knows Sanskrit is not an ordinary human being but he becomes godly. Sanskrit is mother of all languages. Sanskrit is also regarded as the language of Gods. It is believed that Sanskrit has been developed out of 'Damru' of Lord Shiva. This language has got a vocabulary of 15 lac words. If you look at the salient features of this language you will be surprised. You have only 'water' in English for 'Jal'. But Sanskrit has got many synonyms for water like Jal, paani, toy, neer etc.

माननीय सभापति : आपने शायद लिख कर नहीं दिया कि ट्रांसलेशन होनी चाहिए ।

श्री हेमन्त पाटिल : सभापति महोदय, मैंने लिख कर दिया था कि मराठी में ट्रांसलेशन किया

जाए । मैंने यह लिख कर दिया था ।

माननीय सभापति: शायद लेट दिया होगा । आप हिंदी में बोल सकते हैं, क्योंकि ट्रांसलेशन एवलेबल नहीं है, आपका रिकार्ड में नहीं आ रहा है । आप हिंदी में बोल सकते हैं ।

श्री हेमन्त पाटिल : सभापति महोदय, जल के समानार्थी शब्द जल, पानी, तोय, नीर, इत्यादि एक शब्द के अनेक समानार्थी जो शब्द हैं, ये केवल संस्कृत भाषा में पाए जाते हैं । इसकी एक अलग लिपि है । हाल ही मैंने कंबोडिया विजिट की, जहां भगवान विष्णु जी का मंदिर है । मैंने वहां विजिट किया था, वहां दो-तीन हजार साल पुराने स्क्रिपट्स पाए गए, जो संस्कृत में लिखे गए हैं । तीन हजार साल पहले विश्व की भाषा संस्कृत रही है । हमारी विरासत, संस्कृति और चारों वेद संस्कृत में लिखे गए हैं । हमारे छह शास्त्र संस्कृत में लिखे गए हैं । हमारे 18 पुराण, 27 स्मृतियां और 108 उपनिषद संस्कृत में लिखे गए हैं । राष्ट्रपिता बापू जी ने कहा था कि संस्कृत पढ़े बिना आदमी पूरा नहीं हो सकता, यह बापू जी ने कहा था । जिस संसद में बैठ कर हम बात करते हैं और गौरव से बात करते हैं । सभापति महोदय आप जिस आसन पर बैठे हैं, उसके ऊपर भी जो भी लिखा है वहां भी संस्कृत में धर्म चक्र प्रवर्तन लिखा गया है ।

माननीय सभापति : धर्म चक्र प्रवर्तन, परिवर्तनाय नहीं ।

श्री हेमन्त पाटिल : सभापति महोदय, हर जगह पर संस्कृत में श्लोक शब्द लिखे गए हैं, ये सिर्फ संस्कृत में लिखे गए हैं । संस्कृत हमारे देश की बहुत पुरानी भाषा है । हमारे देश में हजारों सालों से गुरुकुल की परंपरा रही है । गुरुकुल में संस्कृत में शिक्षा दी जाती थी । अगर किसी देश को नष्ट करना है, किसी जाति को नष्ट करना है, समाज को नष्ट करना है, तो उसके संस्कार मिटा दिए जाएं, उसकी संस्कृति मिटा दी जाए, ऐसा कहा जाता है । हजारों सालों से संस्कृत पर चलने वाली संस्कृति थी, इसलिए आज तक हजारों आक्रमण हुए लेकिन हमारी संस्कृति कोई नहीं मिटा सका । मैं आपसे विनती करता हूं कि भाषा को देश में हर विद्यार्थी के लिए अनिवार्य किया जाए, भाषा अनिवार्य करके हर स्कूल में सिखाई जाए, इससे विद्यार्थी का आचरण अच्छा हो सकता है । इसका एक अलग कौमुदी व्याकरण है । मैं आपसे विनती करता हूं, हमारे यहां हजारों सालों से तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय था, यहां पूरी दुनिया से लोग पढ़ने के लिए आते थे । वहां पर हजारों ग्रंथ सम्पदा संस्कृत भाषा में थी । ग्रंथ सम्पदा अंग्रेज लोग लूट कर चले गए । इस ग्रंथ सम्पदा से अपना शास्त्र विकसित किया गया । आज रामायण और महाभारत के समय में संजय ऐसा कहता था कि दूर चित्रवाणी से कहता था कि युद्ध के स्थान पर क्या चल रहा है, ये सब हमारे शास्त्रों में लिखा है । ये शास्त्र हजारों सालों में विकसित हुआ । मैं आपसे विनती करता हूं कि संस्कृत भाषा को बढ़ावा दिया जाए । हर स्कूल में हर विद्यार्थी को यह भाषा अनिवार्य की जाए ।

माननीय सभापति : हेमन्त जी, आपने कहा, संस्कृत मृत नहीं ये अमृत भाषा है । मैं दानिश अली से निवेदन करता हूं कि वह अपना वक्तव्य रखें ।

कुंवर दानिश अली (अमरोहा): सभापति महोदय, मैं सेंट्रल संस्कृत यूनिवर्सिटी बिल, 2019 का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं । मुझसे ट्रेजरी बेंच के लोग कह रहे हैं कि मैं संस्कृत में श्लोक पढ़ कर शुरू । मैं आपको बता दूं कि मैं भले ही एक एंग्लो इंडियन में पढ़ा हूं लेकिन मैंने भी संस्कृत पांचवीं क्लास तक पढ़ी है, गच्छती, गच्छे, गच्छामी अभी तक याद है । लेकिन आज जिस तरीके का माहौल सदन के अंदर देखने को मिला और जिस तरह का माहौल देश में बनाया जा रहा है, वह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है । अभी कुछ लोगों ने कहा कि संस्कृत एक डेड लैंग्वेज है इसलिए उसको बढ़ावा नहीं देना चाहिए । मैं इसे नहीं मानता और इसके खिलाफ हूं । दो दिन पहले हाऊस में डिस्कशन हुआ कि एंग्लो इंडियन रहे ही नहीं, मर गए हैं । उनका एक-एक नॉमिनेशन भी खत्म कर दो । मैं उस यूनिवर्सिटी में पढ़ा, जहां उर्दू डिपार्टमेंट के हेड गोपीचंद नारंग होते थे और हिन्दी डिपार्टमेंट के हेड प्रोफेसर मुजीब रिजवी होते थे । हमारा देश मिलीजुली संस्कृति का देश है । हम कहीं न कहीं अपनी राजनीति के चलते उस संस्कृति को खत्म करने में लगे हुए हैं । यह बहुत ही दुर्भाग्यूपर्ण है । बचपन से लेकर एक संस्कृत विद्यार्थी विद्वान बनता है, देश की एक सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी में सेलेक्शन कमेटी के द्वारा उसकी नियुक्ति होती है और आज जब डार्विन थ्योरी को रिजेक्ट करने वाले उर्दू में अच्छी शायरी कर रहे थे, मुझे अपेक्षा थी कि वह उन लोगों को समझाएंगे जो बीएचयू में प्रोफेसर फिरोज की नियुक्ति का विरोध कर रहे थे । आज क्या हुआ, उसको नौकरी छोड़नी पड़ी, उस पर दबाव बनाया गया । यहां शिक्षा मंत्री जी बैठे हुए हैं, मुझे खुशी होती कि यदि

एचआरडी मिनिस्टर स्ट्रिक्ट करते, मैं कंपेनसेशन की बात नहीं करूंगा, एचआरडी मिनिस्टर कहेंगे कि उसको कम्पनसेशन दे दिया गया, उसको उसी यूनिवर्सिटी में दूसरी जगह नौकरी दे दी गई, यह सही नहीं था । …(व्यवधान)

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक: पूर्व वक्ताओं ने भी इस बात को कहा है, डॉक्टर फिरोज संस्कृत विभाग में ही हैं, वहीं हैं और वहीं रहेगें, यह मैं कहना चाहता हूं । संस्कृत सभी की भाषा है, संस्कृत भाषा पूरी दुनिया की भाषा है । दुर्भाग्यवश जिस तरीके से जानबूझकर, भाषा पर चर्चा नहीं है, संस्कृत इस देश की सम्पदा है । दानिश अली जी, पूरी दुनिया ज्ञान और विज्ञान को संस्कृत के ग्रंथों से निकाल रही है, उसकी इस समय जरूरत है । इस समय अच्छा होता कि इस बिल पर चर्चा होती कि क्या-क्या कर सकते हैं, उन ग्रंथों से क्या निकाल सकते हैं । हमारा खगोल शास्त्र है, चरक संहिता है, सुश्रुत संहित है, तमाम चीजें दुनिया हमसे ले रही हैं । हम कैसे उसे आगे बढ़ा सकते हैं, इसके लिए ये है । मैं केवल आपकी भावना से सहमत हूं लेकिन डॉक्टर फिरोज वहीं पर हैं और संस्कृत ही पढ़ाएंगे और वह वहीं पर हैं ।

कुंवर दानिश अली: सभापति महोदय, मंत्री जी ने क्लेरिफिकेशन दिया, मैं भी यह मानता हूं कि संस्कृत एक प्राचीन भाषा है और उसका विकास होना चाहिए । किसी को इस पर आपत्ति नहीं है ।

माननीय सभापति : It is a living language.

कुंवर दानिश अली : It is a living language. क्लेरिफिकेशन से पहले मैं जानता था, डॉक्टर फिरोज को किस तरह से जबरदस्ती एक डिपार्टमेंट से रोका गया लेकिन …(व्यवधान) आप कम से कम अपनी बात तो रखने दीजिए । मंत्री लोग खड़े हो जाते हैं । मेरी भावना आप समझिए । यहां पर सेंट्रल यूनिवर्सिटी बनाने का बिल जाया जा रहा है, उस दौरान उसके एक महीने के आस-पास ऐसी घटना कि एक संस्कृत के प्रोफेसर को बीएचयू के संस्कृत डिपार्टमेंट में नहीं पढ़ाने दिया गया, उसके खिलाफ धरना हुआ, यह दुर्भाग्यपूर्ण है, ऐसी घटना नहीं होनी चाहिए, मेरा यही कहना है ।

महोदय, मैं इतना ही कहूंगा कि संस्कृत हो या तमिल हो, अभी तमिल के लोग भाषण कर रहे थे । भारत की जितनी प्राचीन भाषाएं हैं, इस देश की संस्कृति रही है कि हम सभी भाषाओं को विकसित करना चाहते हैं और होना चाहिए । संस्कृत विश्वविद्यालय बने, तमिल वाले चाहते हैं कि तमिल विश्वविद्यालय बने, उर्दू जो इतनी अच्छी भाषा है, जिसको मैं समझता हूं कि कोई ऐसा दिन नहीं जाता होगा, जब ट्रेज़री बेंचेज से उर्दू शायरों के शेर यहां पर न कहे जाते हों, लेकिन मेरा आपके माध्यम से, सरकार और मंत्री जी से अनुरोध है कि उर्दू के बारे में भी आप सोचिए । मैंने पहले भी कई बार कहा था कि उर्दू के जो टीचर्स हैं, मदरसे में जो टीचर्स हैं मदरसा मॉडर्नाइजेशन के, उनके मानदेय केन्द्र सरकार से प्रदेशों को नहीं जा रहे हैं, उत्तर प्रदेश को नहीं जा रहे हैं । मैं सिर्फ इतना ही कहूंगा कि आप बिल्कुल संस्कृत के लिए जितना करना चाहते हैं, करें और ज्यादा करें, हमारी पार्टी इसके लिए आपके साथ है, लेकिन इस देश की जितनी भी रीजनल भाषाएं हैं, उन सबका भी विकास होना चाहिए । मैं इन्हीं के साथ, इसी उम्मीद के साथ, समाप्त करता हूं कि संस्कृत लैंग्वेज को बढ़ावा मिलना चाहिए, लेकिन उसके साथ-साथ, जैसा पहले के वक्ताओं ने भी कहा है, आप उसमें साइंस को न तलाशें तो ज्यादा अच्छा रहेगा कि प्लास्टिक सर्जरी का ज्ञान भी आप उसमें देने लगें । उसको एवॉइड करें । संस्कृत एक बहुत महान भाषा है, उसका विकास होना चाहिए । बहुजन समाज पार्टी की तरफ से मैं इस बिल का पूरा समर्थन करता हूं । धन्यवाद ।

SHRI N. K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Thank you very much, Mr. Chairperson Sir, for giving me this opportunity to speak on the Central Sanskrit Universities Bill, 2019.

Sir, I rise to support this Bill. I fully support the Bill with a concrete suggestion that the treatment which you are providing to Sanskrit should be given to all the languages, especially, the Dravidian languages.

HON. CHAIRPERSON : Can we say 'all classical languages'?

SHRI N. K. PREMACHANDRAN : Yes, Sir. It should be 'all classical languages'. I stand corrected.

Sir, language has no religion, caste or creed. The language, Sanskrit, is one of the best classical languages. It has definitely contributed a lot for the cultural tradition of our country, and the Indian philosophy. We all appreciate it. But unfortunately, in the olden days, it had been used as one of the means by which the suppressed class or the people belonging to the lower strata had been oppressed. That is the main problem which I would like to highlight.

Sir, Sree Narayana Guru, a social reformer in Kerala and Sree Vidyadhiraja Chatambi Swamikal, another social reformer in Kerala, in Vedadikara Nirupanam, a book which is in Malayalam, have clearly defined and interpreted what Veda is. According to Sree Vidyadhiraja Chatambi Swamikal, Veda is nothing but the only medium to distinguish between *Dharma* and *Adharma*. What is *Dharma* and *Adharma* – it has been well distinguished by a medium called Veda. But unfortunately, these Vedic interpretations, in the olden days, were misinterpreted in a way so as to oppress the downtrodden people of this country, those who are not able to have the basic minimum knowledge. That is the history of India.

The hon. Minister has just cited that definitely, it does not relate to any caste or anything. I said that the language is universal, and it has no religion. But if we read clause 7 of the Bill, it is stated:

> "The University shall be open to all persons of either sex and whatever caste, creed, race or class, and it shall not be lawful for the University to adopt or impose on any person, any test whatsoever of religious belief or profession in order to entitle him to be appointed as a teacher of the University or to hold any other office …"

What prompted the Government to put such a clause in this Bill?

Mr. Minister, you are indirectly admitting that in the name of language of Sanskrit, there is a clear-cut discrimination prevailing in the country as against the Scheduled Castes, Scheduled Tribes and Other Backward Classes. That is why, when you are drafting a Bill to incorporate three deemed universities coming under the purview of the Central University, you are forced to write or draft a particular clause. So, there is a social discrimination prevailing in our country. We have a bitter experience in our State. Last month, a Muslim man had got the appointment as a Sanskrit teacher, but unfortunately, he was not allowed to enter the campus.

SHRI ARJUN RAM MEGHWAL: The hon. Minister has given the clarification.

SHRI N. K. PREMACHANDRAN : It is concerning my State of Kerala.

We are not against Sanskrit. We fully agree with the Government for bringing this Bill. Definitely, Sanskrit language, which is a langue of India, should be promoted. We know what the Universal Classical Languages are. They are Tamil, Latin, Greek, Hebrew, Chinese, Arabic and Sanskrit.

SHRI ARJUN RAM MEGHWAL: You are on clause 7.

SHRI N. K. PREMACHANDRAN : Yes, I am on clause 7.

In a legislation of our Parliament, when we are forced to write or draft such a clause, it means that this language was used, in a way, to exploit the poor people of this country. That has to be changed. I fully agree with clause 7 and I fully approve it also.

There is another discrimination, which I would like to mention. My hon. friend, Shri A. Raja has also rightly described it. Here, I would like to present some statistics regarding the way the Sanskrit is being treated and other languages are being treated. Kindly see the funds that have already been provided. In the financial year 2011-12, the MHRD gave Rs. 108 crore to the Rashtriya Sanskrit Sansthan in New Delhi. Similarly, Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha, New Delhi has been given Rs. 20 crore plus. Then, Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha in Tirupati was provided Rs. 18 crore; Kameshwar Singh Darbhanga Sanskrit Vishwavidyalaya in Bihar was provided Rs. 1.96 crore; Shri Jagannnath Sanskrit Vidyapeetha in Puri, Odisha was provided Rs. 2.35 crore; and Maharishi Sandipani Rashtriya Veda Vidya Pratishthan in Ujjain, Madhya Pradesh was provided Rs. 12 crore. In total, it will come to around Rs. 150 crore.

Sir, if you examine the amount given by the Ministry of Human Resource Development to all other languages, including Tamil, and Malayalam, which has also been declared as a Classical Language in our State by the Central Government, in total, it comes to just Rs. 12 crore! So, the amount given by the Ministry of Human Resource Development for all other classical languages, comes to even less than 10 per cent of the amount given for the Sanskrit language.

That is why, we are saying that there is a clear cut discrimination, which needs to be avoided. We will definitely support the Sanskrit University. But at the same time, same treatment should be meted out to all other universities and all other languages. That is my submission.

Sir, we have a Sanskrit University in Kerala. In my Constituency, one centre is there. But fund crisis is the basic problem. So, I am requesting the hon. Minister of Human Resource Development to provide maximum financial assistance to the Sanskrit University in Kerala and to the centre in my Constituency.

Sir, with these words, I conclude, and I once again express my sincere thanks to you for providing me this opportunity. Thank you.

***SHRI S. VENKATESAN (MADURAI):** Hon. Chairman Sir, Vanakkam. While introducing the Bill, Hon. Minister for HRD said that Sanskrit is the mother of all Indian languages and it is the source of knowledge of the world. This was a shocking statement from the Hon. Minister. I want to ask on what scientific basis you are claiming this. People will want that the Hon Minister should present facts based on scientific proof on the floor of Parliament. What the Minister has spoken is a baseless statement. I want to place before you some statistics. The first stone inscription of Sanskrit was found in Hathipada of Rajasthan and Junagadh of Gujarat. The period is first century AD. The first stone inscription in Tamil was found in Maangulam of Madurai and Pulimaankombai of Theni. The period is 6^{th} century BC. Tamil stone inscriptions were found

700 years before the first Sanskrit stone inscriptions. Now say which language is older? Based on scientific facts and findings we want to say Sanskrit which is 700 years younger to Tamil. From 6th century BC to 18th century AD so far 60000 stone inscriptions have been found in Tamil. I want register in this august House that only 4000 stone inscriptions belong to Sanskrit.

Time and again many members said Sanskrit is the language of Gods. That is their belief. We want to say Tamil is not the language of Gods. Tamil is the language of the people. You have so many literary works in Sanskrit aged 2000 years ago. Can you name at least one woman writer of Sanskrit? There is not even a single woman writer in Sanskrit. But in Tamil even before 2000 years we had more than 40 woman writers. This is the distinction of Tamil as the only world language to have the maximum number of woman writers before 2000 years. That's why we call Tamil as the people's language. Sanskrit has never been a spoken language. It was only used in rituals. Tamil has the unique distinction of being the people's language for more than 3000 years. Even today Tamil is the official language in countries like Sri Lanka, Singapore, Malaysia, Mauritius and Canada. We are not saying Tamil is a language of Gods. But it is the language spoken by 10 Crore people across the globe. Tamil is a secular language. Excavations in Keezhadi have created a milestone in the archaeological history of India. As many as 16000 antique articles are recovered from Keezhadi. But not even one particle belonged to any religion or religious institution. We got more than 100 Brahmi letters. Even before big religions are found, Tamil remained as flourishing language during the 6th century BC.

Hon. Minister of State for Parliamentary Affairs while his intervention during the debate said that this discussion should not be seen as a competition between Sanskrit and Tamil languages. We don't want to fight. Why will we be fighting against the Sanskrit language which is 700 years younger to us? If you time and again project Sanskrit as the identity of Indian culture and Indian knowledge, then the first voice against Sanskrit will be from Tamil Nadu. There are four deemed Universities under the Central Government. You assured that all the four Universities will be made as Central Universities. What have you done? You have changed three Deemed Universities into Central Universities. But the Gandhigram University in Tamil Nadu is left out. Which is problematic for you- Gandhi or Tamil? You should convert Gandhigram University as a Central University. The Director post at the Central Institute of Classical Tamil is lying vacant. As many as 150 faculty positions are lying vacant. You are not allocating funds to language related Universities. Central Institute of Indian languages, Mysore is a Central University. Similarly, the Government should give importance to promotion of all the Indian languages, instead of giving importance to one particular language, Sanskrit claiming it to be identity of India and the language of Gods. Such a behaviour is not good for a secular government. India's identity is in all the languages we have; let us uphold all of them. Thank you.

***SHRI K. SUBBARAYAN (TIRUPPUR):** Hon. Chairman Sir, Vanakkam. Change is the only thing that is unchanged. We should review everything on the basis of the scientific fact that everything keeps on changing. On behalf of Communist Party of India, I want to speak on this Bill. We don't accept opposing any particular language. We do not have any objection for promoting Sanskrit language. Imposition of a language or domination of a particular language on another language can never be tolerated. One can learn a language willingly. Whereas one should not be compelled or forced to learn a language. We cannot accept all the views expressed in Sanskrit language. You can have a liking for Sanskrit language. But to say Sanskrit has everything under this Universe is against the scientific truth. We talk about Vedas.

I come from the land of Mahakavi Bharathi who said 'Vedam Puthumai Sei'. He urged to create new Vedas. You say, Shudras cannot learn Vedas; Panchamars cannot go near them. Can we accept those who

insist saying to cut the tongue of lower caste people who read Vedas and pour molten lead into their ears who happen to hear Vedas.? We cannot accept. You love a language. It is fine. But all the views expressed in that language are not acceptable. Thoughts can be put forth based on the scientific facts of the period. You should accept that there are good as well as bad thoughts in the literary works of Sanskrit.

While addressing the gathering of the Scientists of the world countries you should not say that certain things were made possible even before several thousand years ago. This is not acceptable. We should stop doing this. It is not the fault of the particular language. It is error of time. There is no tolerance from the treasury benches towards opposition members. People have voted you to power to listen patiently to the voices of the opposition on a priority basis. People have not only elected the ruling party members, but also elected the opposition leaders. ...*

How many languages are there in the Eighth schedule? There are 22 national languages besides Hindi and Sanskrit. All languages should be treated equally and with equal status. I wish to urge that all the 22 languages mentioned in the Eighth Schedule of the Constitution should be given equal status with equal allocation of funds.

In the year 1958 while replying to a question raised by the DMK leader EVKS Sampath in this august House, Pandit Jawaharlal Nehru gave an assurance that the people who are from non-Hindi speaking States and whose mother tongue is not Hindi, will not be forced to learn Hindi until they agree to learn that language. Language, religion and race should not be used as factors affecting the national integration of our country. The government should not use them as tools or weapons of destruction. It will never bring good to the ruling party. Thank you.

HON. CHAIRPERSON : We have come a very long way.

ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (साध्वी निरंजन ज्योति): सभापति महोदय, इस व्याख्यान में मूर्खतापूर्ण शब्द आया है, यह ठीक नहीं है ।

माननीय सभापति: जो भी शब्द है देख लेंगे । जो ट्रांसलेशन में आया है, ऐसा कुछ नहीं कहा है । अगर ऐसा कुछ होगा तो हम देख लेंगे । हमारे देश में लैंग्वेज के ऊपर काफी चर्चा पहले से हो रखी है । तीन यूनिवर्सिटीज जब सेंट्रल यूनिवर्सिटीज बनने जा रही हैं तो हमारे मन में भाषा की जो प्रिज्यूडिस है, वे निकलकर आ जाता है । यह हिन्दी भाषा में भी है और दूसरी भाषा में भी है । इसलिए प्रेमचन्द्रन जी ने कहा कि क्लासिकल लैंग्वेज को और भी ज्यादा मान्यता देने की जरूरत है, जैसा मंत्री जी ने सुना है ।

Now, Shri Ram Mohan Naidu to speak.

…(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: I will call you after his speech.

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU (SRIKAKULAM): Thank you hon. Chairman, Sir, for giving me the opportunity to speak on the Central Sanskrit Universities Bill, 2019.

This legislation will definitely help in keeping Sanskrit, which is ancient and mother of all languages, alive. I am saying that this Bill will keep the language alive because once thriving, it is now reduced to barely one per cent of Indians speaking this language. It is a language, which, once upon a time, was used to be the

official language of much of the country but now it is just the official language of one State, Uttarakhand where the hon. Minister is coming from.

Sanskrit is not just limited to Hindus alone. It is a philosophical language used in Jainism, Buddhism and Sikhism also. If one looks at the journey of Sanskrit, it started from the *vedic* era and then it went to the classical era of Sanskrit and now it has come to the present day. To save, promote and propagate Sanskrit, the Government of India gave it the classical language status. I am sure that efforts are being made to spread Sanskrit not only within the country but also in other parts of the world.

I just wish to give one small example of how Sanskrit was dealt with, back in the Eighteenth Century. In the 1780s, when the West was acquiring physical and intellectual treasures from India, Sir William Jones, an Anglo-Welsh philologist and a scholar of ancient India and particularly known for his proposition of the existence of relationship between the European and the Indian languages, in his address to the Royal Asiatic Society of Bengal, said:

> "The Sanskrit language, whatever be its antiquity, is of a wonderful structure; more perfect than the Greek, more copious than the Latin, and more refined than either of them."

The Bill proposes to upgrade the Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha, Tirupati, which is located in Andhra Pradesh, which is one of the oldest institutions established in 1961 to help propagate Sanskrit language in the country along with two other deemed universities which have been mentioned in the Bill. It is a wonderful initiative by the Government of India and we, from the Telugu Desam Party, welcome it. The Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha at Tirupati is a premier institution in the area of higher learning Sanskrit studies, traditional sastras and is focussed on improving Sanskrit pedagogy and combining traditional Sanskrit education with modern scientific research. Sir, the RSV at Tirupati has been requesting for quite some time now for opening up off- campuses and permitting it to give affiliation to other institutions also. But I understand that the UGC is not granting the permission right now. I feel that there should not be any kind of discrimination regarding the Sanskrit language and I am saying this because the UGC in 2015 exempted the Rashtriya Sanskrit Sansthan and allowed it to open off-campuses, and clause 3 of the Bill also has recognised this. So, I request the hon. Minister, through you, Sir, to permit the universities to open more off-campuses for propagating Sanskrit also.

Other than this, like everyone is discussing their own language, it is my responsibility also to discuss my language. I am coming from the Telugu Desam Party. The party itself has the name of our language, Telugu.

HON. CHAIRPERSON: Both Telugu and Desam are there.

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU : Yes, Sir, it has the country and also the language.

On behalf of our language also, we want to make a request. The Government is granting a fund of Rs.100 crore for the development of classical languages. Even Telugu is considered as a classical language by the Government of India. I request that more financial strength be given for the development of these classical languages. I do not want to differentiate between Tamil and Telugu or any other language. The Indian civilization has peaked many years ago. Some of the treasures that we have, the cultures that we have, the traditions that we have, these are all hidden in the languages that we are using today. So, it is necessary to give the same importance to each and every language as the Central Government is giving to Sanskrit.

Sir, I can say many words regarding our Telugu language also. It is one of the most beautiful languages. It is called the 'Italian of the East'. ....*(Interruptions)*

HON. CHAIRPERSON : Italian!

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU : Sir, it is a beautiful language. It is *'Sundara, madhuramaina Telugu'.*

Sir, C. Narayana Reddy *Garu*, who was the Member of the other House, Rajya Sabha, was also a poet himself. ....*(Interruptions)*

HON. CHAIRPERSON : He was a Jnanpith Award winner and a nominated Member of the Rajya Sabha.

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU : Yes Sir, he was a Jnanpith awardee. In his own words he described Telugu language beautifully. He said:

Kadali anchulu daati kadalindi Telugu

Edala lotulu meeti egasindi Telugu

E bhasha chinukaina e yaasa chinukaina

Tanalona kalupukoni taralindi Telugu

There are many literary works that have been done in this language. A lot of wonderful poetry is there in Telugu. I request the Central Government and the hon. Minister also to consider the development of all the classical languages. Give equal importance to each. If a language becomes extinct, the tradition and the culture is also at a deep distress. That is why so much importance has to be given to the language also.

Furthermore, if we get an opportunity, we should definitely discuss this subject in much more detail - how to improve the languages that we have? As the ambit of the Bill is just related to the establishment Central Sanskrit Universities, we should not…इसके ऊपर ज्यादा अतिक्रमण नहीं करना चाहिए । फिर भी मैं चाहता हूं कि इसके ऊपर अलग से चर्चा हो । Then, it will be very good for all the Members of this House.

With these words, I thank you very much for the opportunity.

HON. CHAIRPERSON: Thank you, Mr. Naidu.

I am sure the hon. Minister for Human Resource Development is acquiescing the beauty of our Indian languages and the manner in which the hon. Members are speaking, respecting their own languages. It needs to be also recognized at the national level.

श्री अरविंद सावंत (मुम्बई दक्षिण): सभापति जी, मैं बहुत खुश हूं कि आप वहां बैठकर जो निर्देश दे रहे हैं, वे बहुत खुबसूरत हैं । पहले तो, मैं इस संस्कृत विद्यापीठ बिल का स्वागत करता हूं । मैं दो ही चीज बताना चाहता हूं कि हम जब स्कूल में थे तो माध्यमिक स्कूलों में हमें संस्कृत पढ़ाया जाता था । आठवीं से अकरवीं तक संस्कृत था, उस वक्त ग्यारहवीं एसएससी हुआ करती थी । उससे बच्चों को उससे जान-पहचान मिलती थी । आज पहचान न होने के कारण कौन पुराना, कौन बाद में आया, यह सब झगड़े सुनना नहीं चाहते हैं । हम हर भाषा का सम्मान करते हैं, हमें मराठी भाषा पर स्वाभिमान है और हम अन्य भाषाओं का उतना ही अभिमान रखते हैं, न कि द्वेष करते हैं । हम देखते हैं कि हिन्दी भाषा के बारे में मन में द्वेष है । वह द्वेष निकलना चाहिए । हमें हर भाषा का सम्मान करना चाहिए । मैं एक ही वाक्य कहूंगा कि यह जो बिल आप लेकर आए हैं, यह संस्कृत भाषा का संवर्द्धन नहीं, यह तो संस्कृति का संवर्द्धन करने वाला बिल है । इसका

हम स्वागत करते हैं । जब चेयरमैन साहब बार-बार और इसलिए मुझे बहुत ऊर्जा मिली और अच्छा लगा । मेरे दिल में यह भर आया । आपने क्लासिकल लैंग्वेज की बात कही । मराठी भाषा को क्लासिकल लैंग्वेज का दर्जा देने की बात पिछले कई सालों से चल रही है । मराठी भाषा को क्लासिकल लैंग्वेज का दर्जा देने की बात पिछले कई सालों से चल रही है । मराठी भाषा भी प्राचीनतम और पुरातन भाषा है । उसके सारे कागजात और प्रूफ सरकार को दिए गए हैं । आज तक उसे वह सम्मान नहीं मिला है, जबकि मलयालम, तमिल और तेलुगु भाषाओं को क्लासिकल लैंग्वेज का दर्जा मिला हुआ है । मराठी भाषा को यह आज भी नहीं मिला है । वह दर्जा आप दे दीजिए । जो भी संस्कृत सीखेगा, वह किसी भी भाषा का उच्चारण सबसे अच्छा करेगा । हम देखते हैं कि लोग अंग्रेजी बोलते हैं, अंग्रेजी बोलते समय भी उनकी जो मूल भाषा है, उसके परिणाम हमें वहां दिखते हैं । अगर संस्कृत आएगी तो उससे सभी भाषाओं का उच्चारण सबसे अच्छा कर सकते हैं । मैं फिर से स्वागत करता हूं और इस बिल का भी समर्थन करता हूं । चेयरमैन साहब आपको खास धन्यवाद देता हूं ।

HON. CHAIRPERSON: Now, I want to take sense of the House as it is already 6 o'clock.

संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अर्जुन राम मेघवाल): महोदय, इस बिल पर चर्चा और इसके पास होने तक तथा स्पीकर साहब का निर्देश है कि आधे घंटे के लिए जीरो ऑवर भी ले लिया जाए और जैसा आप चेयर से दिशा-निर्देश देंगे ।

माननीय सभापति : पहले बिल पर चर्चा और उसके बाद इसके पारित होने के बाद फिर जीरो ऑवर लेना है, इसलिए हाउस की सहमति से हम समय को बढ़ाते हैं ।

अनेक माननीय सदस्य : सर, सहमति है ।

HON. CHAIRPERSON : Thank you. It is extended till that time.

Now, I request Mr. Md. Basheer.

18.00 hrs

SHRI E.T. MOHAMMED BASHEER (PONNANI): Hon. Chairperson, Sir, I thank you for giving me this opportunity. While participating in the discussion on this Bill, I have a gratification. In 1993 when I was the Minister of Education in the State of Kerala, Sree Sankaracharya University of Sanskrit was established during my tenure as Education Minister. I have that gratification. It was 26 years back, but I still remember that when I was piloting that Bill, somebody asked why a Muslim League Minister was taking so much of interest in establishing a Sanskrit University. I replied, 'Do not mix the language with religion. Sanskrit is not that of Hindus and Arabic is not that of Muslims.' That was the reply I gave at that time.

As far as Sanskrit language and its development is concerned, the Central Universities may help it, but unfortunately, we have not realised the significance and relevance of Sanskrit language. Pandit Jawaharlal Nehru in his *Discovery of India* said and I quote:

> "If I was asked what is the greatest treasure which India possesses and what is her greatest heritage, I would answer unhesitatingly that it is the Sanskrit language and literature and all that it contains."

Panditji's noting is really commendable and we all must speak proudly about that.

Sir, it is a fact that we have not explored the possibility of Sanskrit language. We all know that. Some people say that Sanskrit language is a dead language, but one fact remains that Sanskrit language was treated like, what is called, an ornamental kind of thing. That concept was there. It is not communicative also, in that

way. That fact is also there. But learning Sanskrit is not like learning a new language. For a student who knows any Indian language can easily do it. Sixty-two per cent of the words used in most of Indian languages are from Sanskrit. About 20 per cent of words are either original or borrowed from Sanskrit language. It is like that.

Sir, I would like to say an important thing. Why was Sanskrit language ignored? We know that even the Sanskrit University in Kashi or Varanasi is facing a lot of problems. I would humbly invite the hon. Minister to visit Kerala Sanskrit University. He will be quite happy to see that. Sir, I would like to invite you also for that. We have to realise that.

We have to understand how to activate the learning of the Sanskrit language. That is what we have to do. Sanskrit should be closely linked with life. It should be a language with all such kinds of considerations. In the Sanskrit universities and institutions, we have to offer composite kind of courses, which should not confine to Sanskrit only. Of course, I may tell you what we did in Kerala. When we started this Sanskrit University in Kerala, we started offering composite courses. We laid emphasis on Sanskrit studies. Sanskrit was offered as a main paper. In addition, we also started offering MSW, B.Ed. etc. Then, some people asked why a Sanskrit University must have MSW and B.Ed. We told that, that Sanskrit University should also have international studies on language and culture.

Shri Danish Ali was saying about some segments like Urdu in the Sanskrit University. We started that. As a part of international studies, inter-cultural studies, we started the composite courses. That was the success behind that university.

Sir, I do not want to take much time. I would like to tell you only one thing. When we are starting these universities, we must have a broadmindedness and we must have a new dimension and a new horizon. It should not be confined to Vedas, Upanishad, Ayurveda, Yoga etc.

As I correctly mentioned, it is a treasure. We have to explore all the possibilities; we have to contour the horizon of the knowledge. These universities, I hope, will play a pivotal role in this direction. With these few words, I conclude. Thank you very much.

HON. CHAIRPERSON : It is really gratifying to note that you have mentioned about extending the horizon in our pursuit relating to education. That is a very good thing and I hope the Government is taking cognizance of it.

You have also mentioned that you were the person who established the Sanskrit University in Kerala itself and as has been rightly mentioned about the turmoil that you must have faced during that time. One can understand that.

But we have come a long way. That was 26 years ago and this is 21st Century. We have to look forward and take full cognizance of the fact as to what actually had brought this language to such a situation and now is the time. The responsibility rests with us to move forward and make this language one of the shining languages of our country.

श्री गणेश सिंह (सतना): सभापति महोदय, आपने मुझे इस विधेयक पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद करता हूँ । महोदय, आपकी जो टिप्पणियां आई हैं, उनके लिए भी आपका धन्यवाद करता हूँ । मैं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय सन् 2019 का समर्थन करता हूँ । सचमुच बहुत पहले यह केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनना चाहिए था । अब तक बहुत लंबा समय बीत गया । इसके लिए मैं सबसे पहले माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का बहुत-बहुत धन्यवाद करूंगा कि संस्कृति के विकास के लिए एवं संस्कृत के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने यह जो एक बड़ा कदम उठाया है, उसके लिए पुन: उनका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ ।

महोदय, तीन डीम्ड संस्थान अभी तक थे, जिनका वित्तपोषण केन्द्र सरकार करती थी । जिनमें एक – राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली की स्थापना सन् 1970 में हुई थी । दूसरा लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, जिसकी स्थापना सन् 1962 में हुई थी । तीसरा, तिरुपति स्थित राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जिसकी स्थापना सन् 1961 में हुई थी । केन्द्र सरकार इनका वित्तपोषण तो जरूर करती थी, लेकिन कई केन्द्रीय विश्वविद्यालय बने, इसके पहले भाषा के आधार पर दो और विश्वविद्यालय बने थे । वे विश्वविद्यालय थे - इंग्लिश एण्ड फॉरन लैंग्वेज यूनिवर्सिटी, दूसरा बना था – मौलाना आजाद उर्दू यूनिवर्सिटी । लेकिन संस्कृत भाषा की यूनिवर्सिटी नहीं बनी थी । जबकि हमारे पास महाविद्यालय संस्कृत के जो पूरे देश भर में थे, 120 सामान्य विश्वविद्यालय, 16 संस्कृत विश्वविद्याय हैं । इनमें एक हजार के लगभग महाविद्यालय संबद्ध हैं । दस लाख छात्र अध्ययनरत हैं । इतनी बड़ी संख्या में महाविद्यालय होने के बावजूद भी केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा इनमें से किसी को नहीं मिला था । माननीय मंत्री जी, आप सचमुच बधाई के पात्र हैं कि आपने इसकी बहुत बड़ी चिंता की है । हमारे देश में संस्कृत भाषा का एक बहुत लंबा इतिहास है । यह पांच हजार साल पुरानी हमारी भाषा है । माना जाता है कि हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद संस्कृत भाषा का उदय हुआ । संस्कृत भाषा का उदय प्राचीन ऋग्वेद काल में हुआ, क्योंकि इसी काल में विश्व के प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद लिखे गए थे तथा इन वेदों में सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद है, जो कि संस्कृत भाषा में लिखा गया ।

इन वेदों को लिखने वाले प्राचीन ऋषि आर्यन थे । इसी कारण इस काल को आर्यन काल भी कहा जाता है । संस्कृत भाषा को आर्यों की भाषा कहा जाता है । मैं मानता हूं कि संस्कृत भाषा देवों की भाषा है । यह देवों की भाषा है, जिस तरह देवी-देवता अमर हैं, उसी तरह से संस्कृत भी अमर है ।

संस्कृत का विकास दो चरणों में हुआ । एक वैदिक संस्कृत, जिसमें हमारे वेद, धर्म शास्त्र, रामायण, महाभारत, उपनिषद आदि लिखे गए । दूसरा पाणिनी रचित संस्कृत, जिसमें अनेक आलौकित ग्रंथ जैसे अभिज्ञान शकुंतलम्, पतंजलि आदि लिखे गए । हिन्दू धर्म से संबंधित सभी ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे गए तथा यज्ञ-अनुष्ठान आदि संस्कृत भाषा में आज भी हो रहे हैं । विद्वानों की शोध के अनुसार प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से संस्कृत भाषा का प्रभाव विश्व की लगभग 97 प्रतिशत भाषाओं में है । ऐसा प्रमाण है ।

नासा के वैज्ञानिकों ने शोध में पाया कि संस्कृत भाषा का प्रयोग करके कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग को सरल बनाया जा सकता है तथा इस भाषा के उपयोग से कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग में किसी भी प्रकार की त्रुटि नहीं हो सकती है, ऐसा उन्होंने शोध किया है ।

अमेरिका के एक विश्वविद्यालय के अनुसार संस्कृत भाषा में बात करने से मानव शरीर की तंत्रिका सक्रिय रहती है । यह अमेरिका के एक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर का कहना है, जिसमें उन्होंने कहा कि डायबिटीज, कोलेस्ट्रोल और ब्लड प्रेशर जैसे रोगों से राहत मिल जाती है । संसार की लगभग 98 प्रतिशत से अधिक भाषाओं पर संस्कृत का प्रभाव है । यह सचमुच हमारे राष्ट्रीय आदर्श वाक्य जो सत्यमेव जयते है, यह पूरी तरह से उसी पर आधारित है ।

महोदय, संस्कृत का प्रभाव सभी भारतीय भाषाओं पर तो है ही, इसके साथ-साथ अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश, रशियन, इंडोनेशिया की बहासा, स्लॉविक भाषा पर भी संस्कृत का प्रभाव है ।

संस्कृत केवल एक भाषा ही नहीं, भारत की ज्ञान परम्परा एवं उसकी आत्मा है । भारत की प्राचीन और वर्तमानता का एक सेतु है । वह विज्ञान हो, तंत्र ज्ञान हो, कृषि हो, स्थापत्य हो, खगोल शास्त्र हो, वास्तु शास्त्र हो, योग हो, आयुर्वेद हो या धातुशास्त्र हो, इन सब में संस्कृत ने एक नई दिशा दी है ।

जब देश आज़ाद हुआ था तो बाबा साहेब ने संविधान सभा में संस्कृत भाषा को राजभाषा बनाए जाने के लिए एक प्रस्ताव दिया था । उस समय बंगाल के लक्ष्मीकांत मैत्रा, असम के नसीरुद्दीन अहमद, चेन्नई के सुब्बाराव, टीटी कृष्णमाचारी, कर्नाटक के सीएम पुनाचा, ऐसी महान् विभूतियों ने इसका समर्थन भी किया था । लेकिन कुछ लोगों ने अंग्रेजी को राजभाषा को लेकर विरोध भी किया तब बाबा साहेब ने कहा था कि भले ही हिन्दी को राजभाषा बनाया जाए, किन्तु हिन्दी भी संस्कृतनिष्ठ हिन्दी होनी चाहिए । यह बात उस समय पर आई थी । दुर्भाग्य है कि राजनीतिक कारणों से संस्कृत का विकास रोका गया, चूंकि यह देव वाणी थी । दुनिया में भारत को विश्व गुरु की उपाधि मिली, इन्हीं वेद, पुराणों की वजह से, इन्हीं के ज्ञान की वजह से ।

स्वयं स्वामी विवेकानंद जी जब शिकागो गए थे और जिस तरह से उन्होंने सम्बोधन किया था, पूरी दुनिया ने उनके सम्बोधन को स्वीकार किया और यह विश्व बंधुत्व का जो भाव है, वह हमारी संस्कृति से निकला । वसुधैव कुटुम्बकम, यह तमाम जो सारे शब्द हैं, आज संसद परिसर में दीवारों पर जो श्लोक लिखे हैं, वे सारे श्लोक संस्कृत में लिखे हैं । इतने वर्षों वर्ष लग गए एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाने के लिए । अब ये जो तीन डीम्ड यूनिवर्सिटयाँ हैं, अब इनको केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा मिलेगा । मुझे पूरा विश्वास है कि जैसे अभी मंत्री जी बीच में कह रहे थे कि इन विश्वविद्यालयों के माध्यम से हम अपने देश की संस्कृति का जो एक वैज्ञानिक प्रयोग है, उसका एक जीवन के साथ जुड़ा हुआ एक अभिन्न रिश्ता है, हमारी संस्कृति उसके साथ जुड़ी हुई है । सचमुच हमें इस भाषा से सब कुछ मिला है । इस भाषा ने हमें संस्कृति दी, संस्कार दिए, आध्यात्म दिया, अक्षरों का ज्ञान दिया, पूजा-पद्धति तथा योग-साधना दी । जैसा कि हमारे प्रधान मंत्री जी हमेशा कहते हैं कि हम देश को आगे ले जा रहे हैं और सचमुच देश तभी आगे जाएगा, जब हम इन भाषाओं का पूरी तरह से संरक्षण करेंगे, इनके ज्ञान का वर्धन करेंगे । इस भाषा को बड़ी संख्या में लोगों के साथ जोड़ने का काम करेंगे । सबका साथ-सबका विकास और अब संस्कृति का भी पूरा विकास होगा, मैं ऐसा मानता हूँ । मैं इस बिल का पूरी तरह से समर्थन करता हूँ । हालांकि सभी राजनीतिक दलों के वक्ताओं ने इस बिल का समर्थन किया है, मैं उन सबका स्वागत करता हूँ । कुछ बातें जो टिप्पणी के तौर पर आई हैं, जैसे बंगाल का मामला आया, मैं समझता हूँ कि इसमें उन सब चीजों को जोड़ना उचित नहीं होगा । डीएमके के हमारे साथियों ने जिस तरह से कहा, वे सारी चीजें इसमें नहीं होनी चाहिए । मैं इस बिल का पूरी तरह से समर्थन करता हूँ । मैं पुन: मंत्री जी और माननीय प्रधान मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ । धन्यवाद ।

।। जपन्तु संस्कृतम - जयतु भारतम ।।

माननीय सभापति : धन्यवाद गणेश सिंह जी । आपने कहा नदी का स्रोत जितना निरन्तर रहे, वह उतना मधुमेय होगा और यह भाषा भी, जो भी भाषा हो, वह जितनी निरन्तर रहे, वह उतनी ही मधुमेय होगी । अगर वह एक जगह रूक जाए, तो वह किसी लायक नहीं रहती है । संस्कृत भाषा निरन्तर रही है और आगे भी रहेगी, इसी विश्वास के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं ।

SHRI ABDUL KHALEQUE (BARPETA): Hon. Chairman, Sir, "भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती ।". Sanskrit is prominent, sweet and divine amongst languages. I want to quote from Bhartrihari's book, '*Nitisatkam*': "The real ornament for a man is neither the bracelets, nor the necklace with the brilliance of the moon, nor luxury baths, nor anointments, nor flowers, not even the splendid hair-dos. It is his speech that adorns a man. Therefore, Sanskrit is one's real embellishment. In contrast to one's graceful speech, our ornaments fade away. Hence, Sanskrit is the only real embellishment of a person."

सर, आज सत्ता पक्ष मुगल सुल्तानों की भी बहुत सारी बातों के लिए आलोचना करते हैं, लेकिन हमें यह मानना होगा कि दारा शिकोह ने उपनिषद का ट्रांसलेशन पारसी में किया था । अकबर के दरबार में संस्कृत की चर्चा हुई थी । काफी रामायण और गीता का ट्रांसलेशन भी अकबर के दरबार में रहने वाले पंडितों ने किया था । डॉ. नहीद आबिदी एक फेमस संस्कृत स्कॉलर बनारस से हैं, उनको वर्ष 2014 में संस्कृत लिटरेचर के कान्ट्रिब्यूशन के लिए पदम श्री मिला था । जब हम संस्कृत पर चर्चा की बात करेंगे तो हमें पंडित गुलाम दस्तगीर, पंडित हयात उल्ला चतुर्वेदी और डॉ. मो. सईदुल्ला का नाम

लेना होगा । मंत्री जी जो बिल लाए हैं, सारे विश्वविद्यालयों के बिल में जो रहता है, वह इस बिल में भी है । सैक्शन 7, पेज नम्बर 7 पर बोला है कि स्टडी हो या रोजगार हो, कहीं पर भी कास्ट, क्रिएट, रिलिजन का कोई डिस्क्रिमिनेशन नहीं होगा । दुर्भाग्य की बात है, मैं दोहराना नहीं चाहता हूँ, लेकिन फिरोज खान के साथ जो हुआ, मंत्री जी ने क्लियर किया, अच्छी बात है, लेकिन दोबारा इस तरह से नहीं होना चाहिए । सत्ता पक्ष कभी-कभी गीता को भी कंपलसरी करना चाहता है । अगर भगवद गीता सब लोग पढ़ लेंगे, हम पढ़ सकेंगे, गैर-हिन्दू या मुसलमान उसे पढ़ सकेंगे, लेकिन पढ़ा नहीं सकेंगे, तो यह बात भी सही नहीं है । मैं असम से आता हूँ । Assam is burning today and the Government is not taking any initiative for a political dialogue, वह बात अलग है, लेकिन मैं यह बात रिकॉर्ड पर रखना चाहता हूँ कि आज असम जल रहा है ।

Sir, before British people came, Sanskrit was a prominent language in Assam. We can find very old Sanskrit inscriptions in Assam like Umachal rock inscriptions, Tezpur rock inscriptions, Barganga rock inscriptions and Kanai Barasi rock inscriptions. The language of the inscriptions is Sanskrit. Most of the texts of the epigraphs were composed by certain learned Sanskrit scholars. In Sanskrit literature, the name of Assam is very prominent as Pragjyotisha and Kamarupa. With these two names, we can find references to Assam in Mahabharata, Puranas and other works of literature also. If that is a fact from history and our tradition, how can we ignore this area from the point of view of Sanskrit now.

सर, मैं आपके तथा इस सदन के इंफॉर्मेशन के लिए बताना चाहता हूं कि जब असम में तरूण गोगोई जी के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार थी तो वहां कुमार भाष्कर वर्मा संस्कृत और पुरातन अध्ययन यूनिवर्सिटी बना था । अभी भी वह यूनिवर्सिटी है । जब मैं असम में विधायक था तो उस यूनिवर्सिटी का कोर्ट मेम्बर रहा था । उसमें काफी प्रोफेसर के पोस्ट्स वैकेंट हैं ।

Sir, I want to draw your kind attention to this and demand that there should be a campus of the Central Sanskrit University in Assam, preferably in Bajali area of Barpeta District which is my Constituency also.

सर, यह जो तीन नए सेन्ट्रल संस्कृत यूनिवर्सिटी के लिए बिल लाया गया है, यहां दिल्ली में जो यूनिवर्सिटी है, इस बिल में लिखा है कि उसमें 12 कैम्पस होंगे । अभी मंत्री जी यहां पर है । अगर इसका 13वां कैम्पस बन जाए तो उसमें क्या दिक्कत है । असम का जो बजाली एरिया है, वहां संस्कृत की बहुत चर्चा होती है । मैं गुजारिश करता हूं कि वहां भी एक कैम्पस होना चाहिए । …(व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय सदस्य, अभी आपके पार्टी के दो और सदस्यों को भी बोलना है ।

श्री अब्दुल खालेक : थैंक्यू सर, अब मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा क्योंकि अभी मेरे और साथी को भी बोलना है ।

श्री सय्यद ईमत्याज जलील (औरंगाबाद): चेयरमैन सर, आज मैं सेन्ट्रल हॉल में बैठा हुआ था और संस्कृत के बिल के ऊपर कुछ लिख रहा था । मेरे महाराष्ट्र के एक सहयोगी सांसद मेरे पास आए और उन्होंने मुझ से पूछा कि आप क्या लिख रहे हैं? जब मैंने उनसे कहा कि संस्कृत के बिल के ऊपर आज मैं भी कुछ कहूंगा तो अचानक उनको हँसी आ गई । उन्होंने मुझसे कहा कि आपका संस्कृत से क्या ताल्लुक है । वह यह बताना चाह रहे थे कि मैं मुसलमान हूं और मुसलमानों का संस्कृत से क्या ताल्लुक है । यह बड़े अफसोस की बात है कि इस मुल्क के अंदर हमने जबान को मजहब के साथ जोड़ दिया है ।

माननीय सभापति: इसके साथ यह भी सच्चाई है कि आप उस इलाके से आते हैं, उसको क्षेत्र को रीप्रजेंट करते हैं, जहां संस्कृत का काफी प्रचलन है ।

श्री सय्यद ईमत्याज जलील: चेयरमैन सर, वहां संस्कृत का प्रचलन काफी है । मुझे मालूम नहीं है कि हम लोग मजहब और जबान को क्यों एक साथ जोड़ते हैं । हालांकि संस्कृत मेरी जबान नहीं है, लेकिन मैं संस्कृत का उतनी ही इज्जत करता हूं, जितनी उर्दू से मोहब्बत करता हूं । मैं यही उम्मीद करता हूं कि हम लोग जिस तरह से संस्कृत को बढ़ावा दे रहे हैं, उसी तरह से हम दूसरी जबानों को भी आगे बढ़ाएं ।

सभापति महोदय, जब मंत्री जी ने अपने भाषण की शुरूआत की तो उन्होंने बताया कि 100 देशों के अंदर 250 विश्वविद्यालय हैं, जहां पर संस्कृत बोली जाती है । हम मंत्री जी से यह पूछना चाह रहे थे कि इस देश के अंदर संस्कृत की हालत ऐसी क्यों हो गई है? मैं आपको आँकड़ों के बारे में बताता हूं । वर्ष 2001 के सेन्सस के हिसाब इस देश के अंदर संस्कृत बोलने वाले महज 14,000 लोग थे । 10 साल के बाद जब दोबारा सेन्सेस हुआ तो उस सेन्सेस के हिसाब से वर्ष 2011 के अंदर इस देश में संस्कृत बोलने वाले महज 24,821 लोग ऐसे थे, जिन्होंने अपने नाम से रजिस्ट्रेशन कराया कि हम संस्कृत बोलते है, लिखते हैं और पढ़ते हैं । इन 10 सालों के अंदर इस मुल्क के अंदर संस्कृत बोलने वालों का इजाफा हुआ तो महज 10,000 लोग बढ़े हैं । अगर हम इसको परसेंटेज के हिसाब से देखेंगे तो इतने बड़े मुल्क के अंदर जो हमारी अपनी जबान संस्कृत होनी चाहिए, उसे कितने लोग जानते हैं? परसेंटेज के हिसाब से 0.00198 परसेंट लोग ही संस्कृत जानते हैं ।

सभापति महोदय, जैसा मैंने आपको बताया है कि जो साहब मेरे ऊपर हँस रहे थे, मैंने उनको यह बताया कि मेरी पत्नी मुसलमान होने के बावजूद भी संस्कृत इतनी अच्छी तरह से जानती है कि पुणे शहर में वह संस्कृत का ट्यूशन लेती है । पुणे शहर के अंदर संस्कृत पढ़ाने वाले टीचर्स नहीं मिलते थे । मेरी पत्नी ट्यूशन लेती थी, तो जो बच्चे को लेकर उनके पैरेंट्स आते थे, वे पैरेंट्स धीरे से उनसे पूछते थे कि क्या आपने इंटरकास्ट मैरिज की है? वे खुद हैरान रह जाते थे कि एक मुसलमान लड़की संस्कृत कैसे अच्छी तरह से जानती है? हम उन्हें यह बताते थे कि हम संस्कृत सीखना चाहते हैं ।

मंत्री जी, आप संस्कृत को बढ़ाइए, हम इसमें आपका पूरा साथ देंगे । हम आपसे यह उम्मीद करेंगे कि महाराष्ट्र के अंदर आप संस्कृत की एक यूनिवर्सिटी शुरू करिए । संस्कृत के साथ-साथ हम चाहते हैं कि उर्दू जबान के ऊपर भी ध्यान दें, क्योंकि उर्दू मोहब्बत की जबान है । मंत्री साहब, जिसके सीने में दिल है और वह धड़कता है, तो यकीनन उसे उर्दू आनी चाहिए, क्योंकि उर्दू एक ऐसी जबान है, जिसके बारे में कहा जाता है कि

"वह करे बात तो, हर बात से खुशबू आए,

ऐसी बोली वही बोले, जिसे उर्दू आए ।"

उर्दू को भी आप उसी तरह से बढ़ाइए । आप जिस तरह से संस्कृत के लिए विश्वविद्यालय शुरू कर रहे हैं, हमारी ख्वाहिश रहेगी कि आप महाराष्ट्र के अंदर एक संस्कृत विश्वविद्यालय के साथ, मेरे अपने शहर औरंगाबाद के अंदर अगर आप एक उर्दू यूनिवर्सिटी को डिक्लेयर करेंगे, तो हम आपका बड़े तहेदिल से शुक्रिया अदा करेंगे ।

महोदय, एक मिनट में अपनी बात खत्म करूंगा । साथ ही साथ ढाई हजार साल पुरानी एक और जबान है – पाली जबान । पाली जबान वह जबान है, भगवान गौतम बुद्ध और भगवान महावीर का जितना भी लिट्रेचर है, वह पाली जबान के अंदर है । आज हमें अफसोस के साथ यह कहना पड़ रहा है कि सिंगापुर, थाईलैंड के अंदर जितने भी लोग वहां पर पाली जबान पढ़ रहे हैं, हम यहां पर पाली जबान को पूरी तरह से खत्म कर दिए हैं । कई साल पुरानी यह मांग है कि महाराष्ट्र राज्य के अंदर, क्योंकि औरंगाबाद शहर बुद्धिस्ट का एक बहुत बड़ा सेंटर है, हमारी यह ख्वाहिश रहेगी कि पाली जबान को भी, जिस तरह से आप संस्कृत को रिवाइव करने की कोशिश कर रहे हैं, साथ ही साथ पाली जबान के लिए भी एक विश्वविद्यालय अगर औरंगाबाद शहर के अंदर शुरू करते हैं, तो हमें ऐसा लगेगा कि यह सरकार सिर्फ बोलती नहीं है, करती भी है, जब वह नारा लगाती है कि "सबका साथ, सबका विकास ।" धन्यवाद ।

माननीय सभापति : कई साल पहले हम क्योटो, जापान गए थे । वहां जापान साम्राज्य के सम्राट की एक पुरानी राजधानी है । वहां जो बुद्ध मंदिर है, वहां जो बुजुर्ग बौद्ध भिक्षु थे, वे अच्छी तरह संस्कृत बोल रहे थे । हमने उनसे पूछा कि क्या

आपने वाराणसी में सीखा है? वे कुछ समय मेरी आंख में आंख डालकर देखते रहे और कहा कि नहीं, मैंने मद्रास से सीखा, जिसको आप चेन्नई कहते हैं ।

***DR. THOL THIRUMAAVALAVAN (CHIDAMBARAM):** Hon. Chairman Sir, Vanakkam. I thank you for giving me an opportunity to speak on this Bill. Secularism is one of the basic principles of this government. As the government should not be dependent on religion, it should not be dependent on language or race as well. That is the beauty of a good government. While expanding and understanding the terms like secularism we should not be dependent on language and race as well. Secularism will also be considered as one which is not confining to a particular language. Although we have recognised 22 national languages in the Eighth Schedule of our Constitution, we have thousands of spoken languages in our country. There are many languages which do not have scripts. Even Sanskrit does not have a script on its own. It is historical truth. We should accept that Sanskrit is ancient but it does not have a script. This script-less Sanskrit has acquired the Devanagiri script for itself which is also true historically. In that scenario, the Union Government is creating three Central Universities on a particular day through a Bill. We want to ask the Union Government why is it not keen in starting Central Universities for Classical languages like Tamil, Telugu, Kannada and Malayalam? That is our demand. All the languages should be treated equally. This Government should cooperate for promotion of all the languages. I urge that Central Universities should be formed for all the Classical languages including Tamil. Classical language status was accorded to Sanskrit only after Tamil. In the year 2004, Tamil language was accorded classical language status followed by Sanskrit in the year 2005. Whether or not Tamil or Sanskrit is bigger? That is not our question. Our question is that whether this Government respects all the languages? All the classical languages should have Universities. The Central Institute for Classical Tamil in Tamil Nadu was created. But the Director post is lying vacant. Research Scholars were not appointed. There were 25 Research Scholars who were getting scholarships. Everything has come to a standstill now. The Union Government should appoint a Director for that Institute; allocate funds meant for research scholars and a Central University should be formed.

I wish to place before you one more demand. During the period of Sanskrit, Pali language was also spoken. Pali or Prakrit language was the language of Gautama Buddha. Buddhism spread throughout the world through this language. Similar to Sanskrit, Pali language spread throughout the world. As Sanskrit helped in spreading Hindutva and in a similar way, Pali or Prakrit language helped to spread Buddhism. There are more than 1 Crore Buddhists living in the country. Keeping in view of the demands of Buddhists, a Central University should be set up for Pali or Prakrit language. Thank you for this opportunity.

HON. CHAIRPERSON : The basic question which the hon. Member asked is that when you are increasing the number of Central Universities, you should also have sufficient number of teachers and professors. अध्यापकों की संख्या भी बढ़ानी चाहिए ।

PROF. SOUGATA RAY : Sir, there are 800 vacancies in Sanskrit Universities.

माननीय सभापति : बाबा जी की 550वीं एनिवसरी चल रही है, वह भी संस्कृत लैग्वेज में सबसे विद्वान थे ।

***SHRI BHAGWANT MANN (SANGRUR):** I thank you Hon. Chairman Sir. The 550th anniversary of Shri Guru Nanak Dev ji is being celebrated throughout the world. I too had gone to Kartarpur and paid my obeisance there. It is the hallowed land where Guru Nanak Dev ji spent sixteen years of his life doing agriculture and farming. Guru ji taught his preaching which talks about the 'welfare of humanity'. He was the creator of 'Bani' (preachings) that talk about the welfare of the whole world.

Sir, we are discussing "The Central Sanskrit Universities Bill, 2019" in the august House today. Sir, India is a land of a large number of languages and diverse and colourful culture. All languages are important. I hail from Punjab. To promote Punjabi language, Punjabi University, Patiala was set up. However, there is an acute shortage of funds in this University at present. There is paucity of money even for paying the salaries of the employees.

Sir, I support the setting up of Sanskrit Universities. However, it should not be at the cost of any other language. All languages should be accorded the same importance and similar facilities should be extended to all languages. Sir, Punjabi language is spoken in many countries throughout the world. When one gets down at Vancouver airport in Canada, on finds sign posts in Punjabi along with those in English and French, welcoming those who have arrived in Canada.

Sir, with a heavy heart, let me say that in many English medium schools in Punjab, students are fined and punished if they speak in their mother-tongue Punjabi. What a shame!

Sir, the Punjabi language has the sweetness of the land of five rivers. We are discussing the Sanskrit Universities Bill today. I am reminded of celebrated author Rasool Hamza of Russia. He wrote a book named "My Dagistan".

It has been translated into maximum number of languages of the world. It deals with languages. According to the author, if one wants to give his blessings to someone, he can say, "May you have the long life of a folk-song". If someone is to be cursed, it can be said, "May you forget your mother-tongue,"

So, Sir, I support this Bill brought by the Hon. Minister today. However, such Central Universities should be opened that cater to every language.

In the end, let me quote Ferozedin Ashraf:-

"I am a Punjabi

I reside in Punjab

I hail from a village

But I have acquired city manners

I understand Urdu

I can speak Hindi well

I also know English.

However, I love my mother tongue Punjabi

I am the pearl in the nose-stud of a married woman

I am the ornament worn by a lady from Punjab."

Sir, in the end, let me say that I used to listen to the 7 O'clock morning Sanskrit news on All India Radio (Akashvani). So, let me say 'Iti Vartah', i.e. now, my speech comes to an end.

Sir, all languages including Punjabi, should be given such facilities and status that is being accorded to Sanskrit today.

Thank you.

HON. CHAIRPERSON : I now invite Shri Raveendranath Kumar.

… (*Interruptions*)

PROF. SOUGATA RAY : Sir, I have a small point of information with regard to this Bill. I have proposed that the Central Sanskrit University be named after …(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON : Perhaps, some clarifications may be sought by the Members after the discussion.

SHRI P. RAVEENDRANATH KUMAR (THENI): Sir, thank you for the opportunity to speak on this Bill. …(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON : You have to seek that clarification again, after the reply of the Minister.

… (*Interruptions*)

PROF. SOUGATA RAY : Sir, the AIADMK MP is a good friend of mine. …(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON : Yes, but every Member counts.

… (*Interruptions*)

DR. NISHIKANT DUBEY (GODDA) : No clarification, Sir; it is only a submission. …(*Interruptions*)

SHRI P. RAVEENDRANATH KUMAR : I thank you for the opportunity to speak on the Central Sanskrit University Bill, 2019. …(*Interruptions*)

I appreciate the Minister of Human Resource Development under the auspicious guidance of our hon. Prime Minister Shri Narendra Modiji for the well-built role in making higher education accessible to aspirants

to the economically weaker sections of the society by creating Central University status to the said three existing Sanskrit institutes. …(*Interruptions*)

We all know that Sanskrit is one of the ancient classical languages, along with our Tamil language, with enriched variety of literature and treasure of knowledge in many fields from spiritual to social and from elementary lifestyle health science to space research. However, due to absence of vast research or expanded study in this language, there is a significant vacuum in research facilities on the literature available in this classical language. Therefore, I hope that this initiative would open a new way for further advanced studies with wide research in ancient literature.

Section 7 of the Bill provides that the University shall be open to all persons of either sex and whatever caste, creed, race, or class and it shall not be lawful for the University to adopt or impose on any person any test whatsoever on religious belief or profession in order to entitle him to be appointed as a teacher of a university, or to hold office therein, or be admitted as a student in the University. This will invite a number of students, not only from across the country but also students from other countries, to undertake research in Sanskrit. I also appreciate that this provision would terminate the presumption that this particular language is meant only for certain group of people.

Sir, we, the people of Tamil Nadu, like Sanskrit but we love Tamil.…(*Interruptions*) We love Tamil. I would request you all to love Sanskrit but you should also like our ancient classical Tamil language. Sir, the founder and the Leader of our AIADMK Party, Puratchi Thalaivar MGR and Puratchi Thalaivi Amma and also leaders of DMK Party, the leader of my colleague Members, Kalaignar Karunanidhi – the list is huge – I would say that everybody struggled for the growth and development of our Tamil classical language. Through you, Sir, I would request the hon. Prime Minister and also the hon. Minister to sanction the establishment of a Central Tamil University in Madurai. Madurai is the centre of our ancient three Tamil Sangams. Having said this, I support the Bill. Thank you very much.

HON. CHAIRPERSON : The Sangam civilization flourished from that place. Thank you, Shri Raveendra Kumar.

This reminds me of a country in Europe named Lithuania. Their language is very much identical to our Sanskrit language. The grammar of Sanskrit and Lithuanian language is the same. Even the words, and the alphabets that they use are quite similar. Lithuania at some point of time was a part of Soviet Union. It is near the Baltic region of Europe.

डॉ. वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़): धन्यवाद, सभापति महोदय । आपने मुझे केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय विधेयक, 2019 पर बोलने का मौका दिया है । मैं आभार व्यक्त करना चाहता हूं, धन्यवाद देना चाहता हूं देश के प्रधान मंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी को, एचआरडी मिनिस्टर रमेश पोखरियाल जी को कि राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति का उन्नयन करके केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के माध्यम से संस्कृत को समृद्धि की तरफ बढ़ाने की दिशा में यह जो कदम बढ़ाया गया है, यह बहुत सराहनीय है । संस्कृत प्यार की, ज्ञान की, संस्कार और संस्कृति की भाषा है । सत्यपाल जी ने इस चर्चा का शुभारम्भ करते हुए, उन्होंने बहुत अच्छे ढंग से अपनी बात रखी । संस्कृत कहती है :

"यं वैदिकामंत्र दृश: पुराण: इन्द्रं यं मात ऋषमारमाहू ।

वेदान्तिनो निर्वचनीयमेकं, यं ब्रहम् शब्देनविनिर्देशन्ति ।

शैवायमिशम् शिवअत्यवोचन, यं वैष्णवाविष्णुऋतुइस्तुवन्ति ।

बुद्धस्तथा अरहन्नति बौद्ध जैना सत श्री अकालेति च सिक्ख सन्त: ।

शास्त्रेति कतिचित कुमारा, स्वामेति मातेति पितेति भक्तया ।

यं प्रार्थेयन्ते जगदीशतारम्, स एक एव प्रभुर्द्वितीय:॥"

संस्कृत भाषा में वेद, पुराण, काव्य, आयुर्वेद, नाट्यशास्त्र, योग, शिल्प, आयुर्वेद, व्याकरण, गणित, ज्योतिष, नीतिशास्त्र, दर्शन आदि के अध्ययन का जितना विपुल भण्डार है, उतना दूसरी भाषाओं में देखने को नहीं मिलता है । मैं आपको एक उदाहरण बताना चाहता हूं । हमारा देश वैश्वीकरण की दौड़ में आगे बढ़ रहा है और चीन हमारे साथ प्रतिस्पर्धा कर रहा है । हम लोग कुछ सांसदों के साथ कनॉट प्लेस में टहल रहे थे, वहां पर चीन के कुछ युवक आगे जा रहे थे । हम लोग हिन्दी में बात कर रहे थे, उन्होंने पलटकर जवाब दिया । उन्होंने हिन्दी में उत्तर दिया । हमने बड़े आश्चर्य से उनको देखा तो उन्होंने हिन्दी में उत्तर दिया और कहा कि हमें हिन्दी आती है और हम संस्कृत का भी अध्ययन कर रहे हैं । वे वैश्वीकरण की दौड़ में आगे बढ़ने के लिए हमारे वेद, पुराण को पढ़कर, हमारे ग्रन्थों को पढ़कर, हमारे देश के गूढ़ रहस्यों को जानना चाहते हैं । आज दुनिया के अनेक राष्ट्र, अभी हमारे आदरणीय मंत्री जी ने बताया, हमारे अनेक वक्ताओं ने इस बात को उद्धृत किया, चाहे अमेरिका की बात हो, चाहे इटली की बात हो, चाहे थाईलैण्ड या म्यांमार की बात हो, जर्मनी के 14 विश्वविद्यालय में संस्कृत को प्रमुखता से पढ़ाया जा रहा है । अमेरिका के लगभग 35 से 50 विद्यार्थी आज वाराणसी में हैं । वे वहां पर केवल डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त नहीं करना चाहते हैं । वे तीन साल का कोर्स करके डिग्री लेना चाहते हैं ताकि वे अपने देश में जाकर प्रचार और प्रसार कर सकें ।

मैं आस्ट्रेलिया गया था । आस्ट्रेलिया में मेलबर्न में सुबह भ्रमण के लिए गया । मैंने एक स्थानपर देखा कि एक मैदान में बहुत बड़ी संख्या में लोग योग करने के लिए एकत्रित हुए हैं । वहां पर एक आस्ट्रेलियन युवक ने संस्कृत में वेद मंत्रों का उच्चारण करके योग कराना शुरू किया । मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि हमारे देश से योग न केवल विदेश में जा रहा है, बल्कि संस्कृत के बारे में हमारे देश के बाहर जाकर, लोग हमारे देश को जानने के लिए संस्कृत को समझने के लिए आगे बढ़ रह हैं । यहां पर जितने भी वक्ताओं ने अपनी बात रखी, सभी वक्ताओं ने इस केन्द्रीय संस्कृत विद्यालय का समर्थन किया । एक भी वक्ता ने इसका विरोध नहीं किया । कुछ लोगों ने अपने स्थान की आवश्यकता के अनुरूप वहां पर विश्वविद्यालय की बात रखी । अन्य भाषाओं के लिए भी विश्वविद्यालय स्थापित करने की बात रखी । यह स्वागत योग्य कदम है । मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि जब मैंने आस्ट्रेलिया का उदाहरण देखा, मैंने चीन के बारे में आपको बताया । अभी बहुत सारे वक्ताओं के द्वारा जो बातें रखी गई हैं, उनमें सभी के द्वारा इस बात को कहा गया कि संस्कृत बहुत विपुल भंडार वाली भाषा है ।

हमारे कर्नाटक में एक गांव है । कर्नाटक का जो शिमोगा जिला है, इस शिमोगा जिले का एक छोटा सा गांव मत्तूर है । मत्तूर गांव की जो आम भाषा है, वहां के लोग जो आम भाषा में बात करते हैं, वह संस्कृत भाषा में बात करते हैं । मध्य प्रदेश में नरसिंहपुर जिले में एक गांव है । वहां के हमारे सुरेन्द्र सिंह चौहान जी ने एक पहल की और उस पहल का परिणाम यह हुआ कि आज उस गांव का बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक, संस्कृत भाषा में ही बात करता है । उन लोगों ने संस्कृत भाषा को सम्पर्क भाषा बना रखा है । ये उदाहरण हैं । इन उदाहरणों से हमें प्रेरणा मिलती है कि हम अगर इस क्षेत्र में काम करने के लिए आगे बढ़ें तो संस्कृत हमारे जीवन में, हमारे समाज में, हमारे राष्ट्र के विकास में बहुत बड़ा योगदान दे सकती है ।

हमारे कुछ मित्रों ने बहुत बातें रखी । मैं अपनी बात एक श्लोक को कहते हुए समाप्त करना चाहता हूं कि संस्कृत सबको बांधने, जोड़ने का काम करती है:

"बुद्धो जनेन्द्रो गौरक्षा शंकरश्च पतंजलि,

रामानुजोतचेतन्य कबीरोगुरुनानक:

ज्ञानेश्वरस तुकाराम: समर्थो मध्यबल्लभो,

नरसिसतुलसीदास: कम्बह साधु कुलोत्मान्

नायनमारा लभाराश्च तिरुवल्लुवरस्तथा ।"

हम सबके प्रति आदर रखते हैं, सबके प्रति प्रेम रखते हैं । सभी के प्रति प्रेम रखना यह संस्कृत भाषा सिखलाती है । इस संस्कृत भाषा के लिए, सम्वर्धन के लिए यह जो विधेयक लाया गया है, मैं इसका समर्थन करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं ।

***DR. D. RAVIKUMAR (VILUPPURAM):** Hon. Chairman Sir, Vanakkam. I thank you for this opportunity to speak on the Central Sanskrit Universities Bill, 2019. Many Hon. Members who spoke here mentioned about the antiquity of Tamil and Sanskrit. Now Tamil is spoken only in the State of Tamil Nadu. But in the past it was spoken by people throughout India. Later it became a language which is spoken in the southern part of India. Revolutionist Dr. Babasaheb Ambedkar said this while quoting linguists who have done researches on languages. The language of the logographic symbols of several thousand year old Indus Valley civilisation were not known. But a linguist named Asko Papalo has found that the script of Indus valley civilisation is that of the earlier form of present day Tamil language. He has been awarded by the State Government of Tamil Nadu for his findings. Tamil has given several words to Sanskrit. Ezhili is a Tamil word is used as Yavanika in Sanskrit. Tamil Scholar Seeni Ramasamy has proved this by having several stone inscriptions as testimonies. The national bird peacock is called as Mayil in Tamil and Mayura in Sanskrit. Mayura is the word that is given by Tamil to Sanskrit. Neer, Anal, Aadu, Kaanakam, KaLam, Thamarai, ThaNdu, Palli, Punnai, Mayil, Malligai, MakaL, Maalai, Meen are some the Tamil words which have gone into Sanskrit as Neera, Anala, yeda, Kaanana, KaLa, Thaamarasa, ThaNda, Palli, Punnaga, Mayura, Malliga, Maga, Maala, Meena. This is stated by linguists. I urge that Tamil which is in the Eighth Schedule of the Constitution should be given due recognition. There are already 16 Universities for Sanskrit language. In about 112 Universities, Sanskrit is used for higher research. Sanskrit is being taught in 10000 colleges of the country. There are 8000 schools which function with aid and help from the government. Sanskrit is not deprived as such. At the time, the Union Government is setting up three Central Sanskrit Universities, I urge that one Central University should be set up for Tamil language. Thank you.

HON. CHAIRPERSON : Confluence of languages and intermingling of languages has been happening for thousands of years. Odia and Tamil have affinity and there has been a lot of Tamil words which are used in Odia literature and Odia language.

PROF. SOUGATA RAY : I think Odia is from Sanskrit.

HON. CHAIRPERSON : It is from both the languages. It is an Indo-Dravidian language. That is why, it is a classical language.

SHRIMATI PRATIMA MONDAL (JAYNAGAR): Sir, I thank you for giving me this opportunity to speak.

Sanskrit was a colloquial language and also a standard language of India in which literature and knowledge was produced, preserved and passed down for many centuries. But, unfortunately through the ages it has lost its earlier glitter and needs considerable efforts for its preservation and survival.

The Bill seeks to grant the status of university to Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi, Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth, New Delhi, and Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth, Tirupati. The aim of the proposed legislation is an important step to bring back the glory of Sanskrit.

Now coming to Section 6, sub-section 2, clause (iv), it talks about the mode of evaluation for the student. Here I would like to state that language learning process recognizes three factors through which language can be thoroughly learnt, *i.e.,* reading, writing and speaking. In case of Sanskrit language, students usually read, rarely write and seldomly speak. As a result of this, even after doing graduation, post-graduation or doctoral degree in this language, one does not get the confidence to speak.

So, I would request the Minister to make a provision for assessment of speaking skills of the students within the Bill. The Sanskrit through Sanskrit approach as put forward by the N. Gopalaswami Committee must be accepted.

Now coming to Section 7 of the Bill, it deals with a very delicate and important matter. It states that no discrimination should be made on the basis of sex, caste, creed, class and others. I would like to thank the Minister for this provision. Recently, we saw that appointment of a Muslim Professor at Benaras Hindu University's Sanskrit Department caused a huge uproar and protests were carried out.

HON. CHAIRPERSON : That has already been settled. Already the Minister has talked about it very categorically.

SHRIMATI PRATIMA MONDAL : Sir, coming to Section 8, sub-section (iv), it states that every inspection desired by the Visitor, that is the hon. President of India, will require a prior notice. I would like to request the hon. Minister to add a clause that even *impromptu* or unannounced inspection can also be done. Surprise inspection will reveal the actual scenario. Either the said clause should be added or the provision for providing a prior notice for every visit should be removed, or else the true environment and arrangement of the universities will never be revealed.

Another problem in the Sanskrit Departments of our educational system is lack of faculty. In an answer to a question asked by hon. MP, Shri Kanakmal Kataria, it was mentioned that 709 posts of teachers are lying vacant in Mahavidyalayas of the country. In this connection, the UGC had sent letters to the Mahavidyalayas affiliated to universities in June and 5 more such letters have been sent till October. In this connection, I would like to know from the hon. Minister how many vacancies have been filled up so far. Also, how will it be ensured that these universities will not have a lack of faculty? It is because in reply to another Starred Question, the hon. Minister informed that there are 89, 50 and 38 posts lying vacant at the Rashtriya Sanskrit Sansthan, Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth and Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth respectively.

HON. CHAIRPERSON : That point already has come.

SHRIMATI PRATIMA MONDAL : Sir, I would like to request the Government, through you, to take steps to break hunger strike of Ms. Swati Maliwal and save her life by considering her six valid demands.

Thank you.

SHRIMATI VANGA GEETHA VISWANATH (KAKINADA): Hon. Chairperson, Sir, thank you for giving me this opportunity to participate in the discussion on this Bill.

Sir, I, on behalf of the YSRC Party whole-heartedly support the setting up of the Central Sanskrit University Bill, 2019. The pride and prestige of India is unity in diversity -- it is not only just because of different religions, different castes, different customs but also because of different languages. I would like to request the hon. Minister to support, promote and develop all languages in India.

Sir, I would like to draw the attention of the hon. Minister for the correction of one word in the Bill. It is because Tirupati is in our State. The Government has proposed a deemed university there. On behalf of all people of Andhra Pradesh we would like to thank the hon. Minister for this. I would like to request for a small correction in the spelling of the place. This may be a typographical error. The spelling should be TRIPUTE. The hon. Minister may direct the concerned persons to carry out the necessary correction.

HON. CHAIRPERSON: Typographical errors can be corrected.

SHRIMATI VANGA GEETHA VISWANATH : Sir, the passage of this Bill will help enhance the opportunities for imparting education in the field of Indian philosophy, yoga, Ayurveda and Naturopathy. Out of my concern for the subject of Sanskrit, I would like to say a few words in Sanskrit.

*Since ancient times India has been the land of gods, the land of sages and the land of knowledge. Her knowledge originated and developed in the Sanskrit language. Vedas are the most ancient scriptures in the world. All sciences originated from Vedas. Philosophy, astrology, Purans, epics, politics, economics etc. developed in Sanskrit. Sanskrit is the mother of Indian languages.

Indian culture dwells in Sanskrit. “Let noble thoughts come to us from all sides” – Soul of Indian culture dwells in *Rigveda*. For setting up the Central Sanskrit Universities this Bill is commendable. But, Sir! Only by establishing the Central Sanskrit Universities the goal of teaching Sanskrit can not be achieved. There are many Gurukuls in our country. They are not financially aided by the Central or State Governments.

In secondary education students wish to study Sanskrit as the third language, but teachers are not available.

Therefore, it is requested that in secondary and higher education able teachers may kindly be appointed. Thanks.*

HON. CHAIRPERSON : The House wholeheartedly appreciates your speech made in Sanskrit. It is a great thing that you have given your speech in Sanskrit language.

Now I request Shri Pratap Chandra Sarangi, hon. Minister to speak.

***THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF MICRO, SMALL AND MEDIUM ENTERPRISES AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FISHERIES, ANIMAL HUSBANDRY AND DAIRYING (SHRI PRATAP CHANDRA SARANGI):** Mr. Chairman Sir, I wish to speak in Sanskrit. I may kindly be allowed to speak something in Sanskrit to support the Central Sanskrit Universities Bill-2019. Sanskrit is the soul of India. We cannot imagine India without Sanskrit. I have great respect for Ms. Kanimoghi. She is a senior MP. There is no dispute between Tamil and Sanskrit but why there is some dissatisfaction in their mind, I am not able to understand this. Sanskrit is not the mother of only Indian languages but also of all languages in the world. Latin, Greek, English etc. have originated from Sanskrit. Odia is the closest language to Sanskrit. Latin and Greek are also close to Sanskrit. In Sanskrit we use to word 'Matri', from which the word 'Matar' in Latin and mother in English developed. Similarly we use 'Pitri' in Sanskrit. In English the phonetics is not perfect. They are not able to pronounce the sound 'ta'. That is why they made it 'Peter' which was a very popular word before 50 years in English literature. In Latin, Greek, English respectively *peter pater, father* words were derived from Sanskrit word 'Pitri'. Similarly 'Bhratri' because 'brother', 'Duhutri' became 'daughter', 'path' became 'path', 'panch' became 'punch', 'manav' became 'man', 'gau' became 'cow', 'nam' became 'name' in English . Similarily several other English words were derived from Sanskrit.

There is no dispute about the antiquity of Sanskrit. Sanskrit has the most authentic grammar framed by Panini. In his grammar there are examples cited from preceding grammar. That is not the first grammar. But for studying Vedas it is essential to study the Ashtadhyayi of Panini. There are Vedangas – Shiksha, Kalp, Nirukt, Chhand, Vyakaran and Jyotish. But in common use of Sanskrit Panini's grammar is not required. We can converse without having acquired the knowledge of Panini's grammar. I have also not formally studied Sanskrit in a college.

Panini's grammar came into existence in 1400 BC which means about 3500 years ago. In fact, language is borne before its grammar. Sanskrit is very ancient language. There is adequate coordination between Sanskrit and Tamil. Sanskrit is the mother of all Indian languages and also the mother of Latin and Greek. This is a matter of pride for us.

But people ask, what will one do to after having studied Sanskrit? How will one earn his living, will he get some employment? I would like to ask whether there is any guarantee of employment after having studied English. Employment is quite essential for human life. But only livelihood is not the objective of human life. Filling belly is the nature of animals. Human life exists for the expression of greater consciousness.

If we study Sanskrit, there is guarantee of employment. If we study our traditional science of architecture, we can go to foreign countries, as several people have done, and earn lakhs of rupees and bring foreign currency to our country. We can earn lakhs of rupees in our country too. If we study well Yoga Shashtra we can earn money in our country and in other countries as well. If we study Ayurved, we can get employment or we can make ourselves self-employed or we can prepare medicines or become pharmacist. If we study Karmkand, we can fulfill the ritualistic needs of migrant Indians in foreign countries or in our own

country and earn money. If we study literature and grammar, we can get employment in schools, colleges and universities in our country and also in foreign countries. Through Sanskrit we can promote the values of human life and experience the elevation of values in our life.

In Sanskrit literature it is believed, Land is the mother and I am the son of earth." Expressing gratitude to the earth, when we rise in the morning and before leaving the bed, we touch the land and recite:

Land is our mother and we are sons, She is the goddess who has ocean as her garments and mountains as her bosom, She is the consort of Shree Vishnu, I bow to you, Please forgive me for toughing you with my feet.

Shree Ram Said:

O Laxman, Lanka of Gold is not pleasing me,

Mother and motherland are greater than even heaven.

Devotion for mother, father, teacher and motherland is the value inculcated by Sanskrit literature.

Vedas prescribe :

Respect your mother

Respect your father

Respect your teacher

Respect your guests

and

The teacher is Brahma, he is Vishnu, He is Maheshwar.

Sanskrit literature says:

Cows are mothers of the world.

May all be happy May all remain healthy

May all meet with the good

May no one meet with sorrow !

"O Arjun! Ishwar dwells in the heart of all."

Sanskrit literature is the treasure of human values.

The entire world knows that Sanskrit is the most scientific language in the world.

In Odisha, with the Secretary, Higher Education once I had an argument about Sanskrit. A decision was taken regarding selection of subjects. He said Sanskrit is an ancient language, how it can become modern? I said, "Brajendra Nath Sheel has written in India is Ever Aging but Never Old:

Despite Sanskrit is the most ancient language, it is present in the form of all flourishing languages of the world as their mother. Therefore Sanskrit is ever new and all times ancient. Sanskrit cannot become old as the Himalayas do not grow old. These ranges remain flourishing perpetually."

He said, “There are some special features of modern languages.”

I asked, what is the special feature? Are modern languages scientific? Sanskrit is the most scientific language. Please write, g h o t i; what does it make? He replied “Ghoti.”

I ask how we can say aap in English?

HON. CHAIRPERSON: The hon. Minister will discuss about the language separately, if the House decides.

SHRI PRATAP CHANDRA SARANGI : Please allow me for two minutes.

Now Sanskrit is being respected highly in foreign countries. In our country people are not able to converse in Sanskrit. India is the origin of Sanskrit.

In our country the sage Ved Vyas compiled the Vedas. Vedas are the written scriptures. It survived on the oral system known as Shruti. Nobody can determine authentically the time when Vedas appeared.

5000 years ago Ved Vyas thought that memory of people would deteriorate. Then he prepared the script of the Vedas in the Devnagari script. He became the editor of the Vedas. Sages had the visions of the Vedic hymns. They are not the creator of the Vedic hymns. Vedas have appeared from the four months of Brahma.

All this is in Sanskrit. All 18 Purans too have been written in Sanskrit. Panchdashee, Vivekchudamani; Sankyakarika, Mohmudgas Shaddarshan Sangrah, Siddhantdharm etc. have been written in Sanskrit. Can we think of India, keeping aside all this literature? Without Sanskrit we cannot recognize ourselves.

Through The Central Sanskrit Universities Bill a historic work is being done. Shri Narendra Modi ji is our glorious Prime Minister. To him and also to the Hon. Minister of Human Resource Development I am thankful.

Due to decline of Sanskrit, India declined. Therefore, with the respect of Sanskrit the revival of the nation will become possible. Once a farmer Prime Minister of India said in a foreign country. “We do not have one culture, we have mixed culture. Ours is not a nation it is a team of nations, ours is not a country, it is a (sub-continent) group of countries.

Sir, if we objectively analyze the history of India we can observe that the above statement has no meaning. Sir, Odia, Bihari Bengali, Tamil, Telugu and all got united and made a great nation united. In fact, sound waves purify the atmosphere, mind becomes happy, several diseases are subdued, and all this is proved by science. Sir, the branches, leave, stem, flowers all appear distinct but derive their nutrients from the same root. In the same way Sanskrit is the mother of Indian languages.

माननीय सभापति : धन्यवाद । मंत्री जी उत्कल देश से आते हैं, जहाँ दो विभूतियों के बारे में काफी चर्चा होती है ।

…(व्यवधान)

SHRI A. RAJA (NILGIRIS): Sir, a person who represents the Government, should not speak like this.

SHRI PRATAP CHANDRA SARANGI : The Secretary said, “There is no flexibility in Sanskrit. I wish to cite an example. In English we say – Ram is going home by road. In Sanskrit it can be said in 24 ways changing the place of Padas. And all the sentences will be grammatically correct. This is such a flexible

language, such a lovely language, musical language, language of rhythmic beauty, phonetically scientific language, purified language.

HON. CHAIRPERSON: That is the beauty of the Indian language. It is not Anglo language. That is what he is saying.

…(व्यवधान)

SHRI A. RAJA : Then, India will be fragmented into pieces …(*Interruptions*)

SHRI PRATAP CHANDRA SARANGI : Sir, with humility submitting what Vivekananda said that in Sanskrit lies the pride of India. But now it has been proved that Sanskrit is the pride of the entire world. It is said in the Vedas that the one who is physically and mentally sound can move ahead on the path of getting united with the Ishwar. In youth one should do his duties with enthusiasm and vigour. When the flower grows old that is offered in the feet of the lord. Similarily when man grows old, he should follow the path of getting united with the lord.

Therefore, let us all come together, let us all rise above the political barriers and support the Bill for establishing the Central Sanskrit Universities – and make the new history of India.

With these words I conclude.

Hail Sanskrit,

Hail India.

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण): सभापति महोदय, धन्यवाद कि समय खत्म होने के बाद भी आपने मुझे इस बिल पर बोलने का मौका दिया । मैं सबसे पहले तो माननीय मंत्री जी का बहुत-बहुत धन्यवाद अदा करता हूँ कि आप आज सेंट्रल संस्कृत यूनिवर्सिटी बिल लाए हैं और पोखरियाल जी का मैं इसलिए भी धन्यवाद करता हूं कि जब से उन्होंने इस मंत्रालय का कार्यभार संभालना शुरू किया है, तब से संस्कृत भाषा को कैसे और प्रचलित किया जाए, इस पर कार्य किया है । उस दिशा में उन्होंने संस्कृत बोलने वाले गाँव के विकास की योजना भी बनाई थी । मुझे लगता है कि सदन को यह पता नहीं होगा कि जब वह उत्तराखंड के मुख्य मंत्री थे, तब उन्होंने इस भाषा के विकास के लिए भंतोला गाँव को अडॉप्ट भी किया था । इसलिए मैं मंत्री जी का बहुत-बहुत धन्यवाद अदा करता हूं कि आज उनके मन की बात, मुझे लगता है कि संस्कृत विश्वविद्यालय के माध्यम से पूरी हो रही है । भारतीय परम्परा को अगर जानना है, तो संस्कृत एक महाद्वार है । संस्कृत भारत को जोड़ने वाली भाषा है ।

यह देश विविध भाषाओं का है । कालडी में जन्मे आदि शंकराचार्य ने देश की चारों दिशाओं में मठ स्थापित किए, दो बार देश की परिक्रमा की । उन्होंने ज्ञान, संस्कृति और अध्यात्म के प्रसार के लिए संस्कृत को ही साधन बनाया । संस्कृत के सिवा हम भारत की कल्पना नहीं कर सकते । भारतीय ज्ञान, विज्ञान, परम्परा संस्कृत भाषा में है । चाणक्य की राजनीति हो, भास्कराचार्य का गणित हो, चरक सुश्रुत का आयुर्वेद हो, पतंजलि का योग हो, पराशर मुनि का कृषिशास्त्र हो, भरत मुनि का नाट्यशास्त्र हो, ऐसे अनेक विषय संस्कृत में ही विकसित हुए हैं । इसी ज्ञान, विज्ञान के बल पर हमारे पुरखों ने कभी देश समृद्ध किया था, सुवर्णभूमि किया था । हमारे ऋषि, मुनियों द्वारा विकसित ज्ञान भंडार का हमें आज उपयोग करना चाहिए । आज रामचरितमानस हो या देश के महा संत, जिन्होंने सबसे कम उम्र में, संत ज्ञानेश्वर जी ने ज्ञानेश्वरी लिखी थी । उन्होंने पूरे देश को विश्व शांति और जीवन कैसे जीना है, यह संदेश दिया था । आज उसी ज्ञानेश्वरी के एक-एक पैराग्राफ पर, एक-एक लाइन पर लोग पीएचडी कर रहे हैं, इतना शोध कर रहे हैं । इतनी महत्ता संस्कृत की है, इतनी महत्ता हमारी ज्ञानेश्वरी की है । वर्ष 2011 के सेंसस के अनुसार देश में सूचीबद्ध 22 भाषाओं में संस्कृत सबसे कम

बोली जाने वाली भाषा है । भारत की इस सबसे पुरानी भाषा को केवल 24,821 लोगों ने अपनी मातृभाषा बताया है । इसे बोलने वाले लोगों की संख्या बोडो, मणिपुरी, कोंकणी और डोगरी भाषा से भी कम है । लोग इस धारणा के हो चुके हैं कि जो संस्कृत सीखता है, वह सिर्फ पूजा पाठ करता है । मुझे लगता है कि हमें इस धारणा से बाहर निकलना होगा और संस्कृत को भी एक प्रोफेशनल लैंग्वेज बनाने के लिए हमें आगे जाना है । उसमें आगे जो रोजगार का इश्यू आता है, लोगों को लगता है कि अगर हमने संस्कृत सीखी तो ज्यादा से ज्यादा हम ट्रांसलेटर बनेंगे । इस धारणा से हमें लोगों को बाहर निकालना है । इस बिल के माध्यम से एक बहुत अच्छी पहल मंत्री महोदय ने की है । आज मंत्री जी ने कहा है कि संस्कृत का बहुत प्राचीन इतिहास है और यह ग्रीक, लैटिन, जर्मन, गोथिक आदि जैसी अनेक भाषाओं की जननी है । भारत के सभी प्रांतीय भाषाओं में संस्कृत शब्द प्राप्त होते हैं । भारत के भीतर जहाँ 'सत्यमेव जयते' एक सामाजिक संदेश है, वहीं 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी' नेपाल का सार्वजनिक मंत्र है । वैसे तो दुनिया के हरेक देश में आज संस्कृत की डिमांड है, लेकिन मुझे लगता है कि जर्मनी की जर्मन भाषा भी संस्कृत से निकली है । जर्मनी में आज 14 यूनिवर्सिटीज हैं, जहाँ संस्कृत के कोर्सेज चलाए जाते हैं ।

जर्मन में चरकोलॉजी के नाम से एक डिपार्टमेंट भी है । जो हमारे चरक ऋषि हैं, वहाँ उनके नाम से एक अलग डिपार्टमेंट भी है । कई लोग ऐसा कहते हैं, मुझे पता नहीं कि यह सच है या नहीं, लुफ्थांसा जो जर्मन की एयर कैरियर है, उसका नाम भी संस्कृत भाषा से आया है । लुफ्थ मतलब खत्म और विलीन और हंस विशेष किस्म का एक पक्षी होता है, तो उसको मिलाकर यह शब्द लुफ्थांसा बना है । मुझे लगता है कि आज एल्गोरिथम भी संस्कृत भाषा में आ रहा है ।

महोदय, मैं एक मिनट में अपनी बात समाप्त करूँगा । यह कहा जाता है कि 102 अरब 78 करोड़ 50 लाख शब्दों का प्रयोग महर्षि पाणिनी के समय से अब तक हुआ है । जो कंप्यूटर का एल्गोरिथम आ रहा है, अगर और 100 साल तक संस्कृत चली, तो ये जो शब्द डबल हो जाएंगे । इतनी प्राचीन भाषा संस्कृत है । यह दुनिया की एकमात्र ऐसी भाषा है, जो हजार साल पहले जैसी थी, वैसी ही आज भी है । इसी के साथ मैं यहाँ पर कुछ सुझाव देना चाहता हूँ । आज हम यहाँ पर संस्कृत विश्वविद्यालय को, तीन यूनिवर्सिटीज को केंद्रीय विश्वविद्यालय का स्वरूप दे रहे हैं । इसी के साथ वहाँ पर टीचर्स की जो कमतरता है, 809 रेगुलर टीचर्स की कमतरता है, उसको भी फुलफिल करना चाहिए । इसी के साथ स्कूल लेवल पर जो संस्कृत पढ़ायी जाती है, हमारे समय में संस्कृत एक ऑप्शनल लैंग्वेज थी । थ्री भाषा सूत्र के अनुसार पहले ऐसा कहा गया था कि दो भाषा राज्य की भाषा होंगी और तीसरी भाषा दूसरे राज्य की भाषा होनी चाहिए, लेकिन अब आते-आते ऐसा हो चुका है कि दो भाषा हमारे राज्य की भाषा हों और तीसरी भाषा फॉरेन लैंग्वेज हो । महोदय, मुझे आपके माध्यम से यह कहना है कि संस्कृत को थर्ड कम्पल्सरी लैंग्वेज के माध्यम से माना जाए, जैसे हमने योग को कम्पल्शन किया है, वैसी ही हमें संस्कृत को भी करना होगा । …(व्यवधान)

महोदय, मेरी बात खत्म होने वाली है । जैसे संस्कृत को ग्रामर के आधार पर पढ़ाया जाता है, मुझे लगता है कि इंगलिश भी ग्रामर के आधार पर पढ़ाया जाता है । अगर संस्कृत को आने वाले समय में संभाषण के तौर पर पढ़ाया जाए तो बच्चों की ज्यादा रूचि उसमें आएगी और ज्यादा से ज्यादा लोग संस्कृत का ऑप्शन करेंगे ।

महोदय, मैं लास्ट में कहना चाहता हूं कि आज संस्कृत के लिए इतने सारे लोग कोशिश कर रहे हैं । जैसे हिन्दी भाषा कमेटी है, वैसी ही संस्कृत के प्रचार के लिए भी अगर हम एक कमेटी बना दें तो पूरे देश में संस्कृत का प्रचार हो सकेगा और ज्यादा से ज्यादा संस्कृत के विश्वविद्यालय भी खोले जा सकते हैं । इसी के साथ मेरी एक लास्ट डिमांड है कि आज हम संस्कृत के लिए इतना सब कर रहे हैं । इसके अलावा, हमें मराठी भाषा के लिए भी कुछ करना है । हम कई सालों से डिमांड कर रहे हैं ।

HON. CHAIRPERSON : It is a very good suggestion.

SHRI SAPTAGIRI SANKAR ULAKA (KORAPUT): Thank you, Chairman, Sir, for giving me this opportunity. I rise to speak on the Central Sanskrit Universities Bill, 2019 which seeks to convert the existing three Deemed to be Universities in Sanskrit as Central Universities.

सर, मैं इस बिल का सपोर्ट करता हूं । There is no reason why we should oppose the establishment of the Central Universities. But I would like to take you through the Statement of Objects and Reasons. इसमें आपने

लिखा है कि it would help in getting better faculty, attract foreign students, Sanskrit scholars, foreign faculty of international repute and help in international collaborations with global Universities across the world. If I go to the Financial Memorandum, there is no increase in the Budgetary support. For example, the Deemed Universities which used to get Rs. 100 crore, Rs. 20 crore, and Rs. 18 crore, they still continue to have the same financial support.

I will share my own personal bad experience. In 2009, under the Act of Parliament, a Central University was established at Koraput. Sir, 10 years have passed and still it is not started. We have been flagging the issues through multiple MPs from multiple parties regarding the teaching staff. There are vacancies in teaching posts; we just recently got a Vice Chancellor. I personally followed up the issues regarding the Central University of Koraput. There used to be no Registrar; there used to be an acting VC. They cannot recruit staff. This has also been flagged in one of the Standing Committee Reports on challenges in higher education.

I would like to say that, firstly, teaching is not a lucrative profession for our students. They are not interested to join teaching profession any more. Secondly, since it is a rural area – I am talking about the Koraput University – they do not want to go there and profess teaching. Thirdly, the process of becoming a Professor is very long. I think, it takes 10 to 11 years before you can become a Professor or an Associate Professor or an Assistant Professor. This is something which you need to see and revisit. We can create multiple Universities but we need teaching staff also.

If I talk about the Sanskrit University, there was a Starred Question and the hon. Minister had replied just in June this year. If you look at it, there are

1748 sanctioned posts and there are 809 vacancies including 163 in Delhi itself where you have two Deemed Universities, and we are talking about 120 Universities throughout the country. This is a big problem which needs to be addressed. We just cannot go on creating a University without faculty, etc.

One of the suggestions which I want to make is this. We have multiple Universities. When we talk about the Central University, Koraput and when I compare it with JNU, there are no credit rating agencies whereby we can say that such and such University is No. 1 or No. 2. A Central University is supposed to be a premier University but in the absence of any credit rating agency, we do not have any facility where we can actually compare. There is no facility of students giving the feedback to the Professors or any peer giving the feedback to the Professors, which happens in foreign countries. One major thing, which we have seen, is excessive control and prescription of terms and conditions for important posts by the Central Government. This would result in blatant politicisation of academia and I think this needs to be controlled.

I would like to put some demands relating to the Central University of Koraput. We need to revisit the curriculum. We need to make it modern. We need to see how people are attracted. Our own people are not going to the Central University. Forget the people coming from foreign countries. Finally, can we have either an off-campus of the Sanskrit University in Rayagada district which happens to be part of my constituency?

Also, since Oriya is a classical language, I think, it is high time we need a Central University of Oriya. I hope you will bring a Bill for this. From Odisha, we all will immediately support the Central University of Oriya. That is what I have been requesting you. Thank you so much.

HON. CHAIRPERSON : The hon. Member hails from a place called Koraput. If you go to Koraput, you will find even today the description of nature's beauty and all those instances which are explained in

Kalidasa's Kumarasambavam. That is the place where from the hon. Member hails. Other than Takshashila, Nalanda and Vikramashila, there was also another world-wide known, famous university which was called, Pushpagiri Vishwavidyalaya which had been mentioned by Huien Tsang in his travelogue. So, when we discuss these three universities, namely, Takshashila, Vikramashila and Nalanda, also remember about Pushpagiri which flourished for more than 300 years in the Sixth, Seventh and Eighth Century A.D.

Now, the hon. Minister to speak.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक : श्रीमन, मैं आपका आभारी हूं कि आपने सदन का समय दो बार बढ़ाकर इस महत्वपूर्ण बिल पर पूरे सदन का विचार प्रकट करने के लिए आपने अपना आर्शीवाद दिया ।

श्रीमन, मैं देख रहा हूं कि अभी हमारे श्री बैन्नी बेहनन जी, डॉ. सत्यपाल जी, श्री ए. राजा जी, प्रो. सौगत राय जी, डॉ. सत्यावती जी, श्री कौशलेन्द्र कुमार जी, श्रीमती राजश्री मल्लिक जी, श्री हेमन्त पाटिल जी, कुंवर दानिश अली जी, श्री एन.के.प्रेमचन्द्रन जी, श्री सुब्बारायण जी, श्री राम मोहन नायडू जी, श्री अरविंद सावंत जी, श्री बशीर साहब, श्री गणेश सिंह जी, श्री अब्दुल खालेक जी, श्री सय्यद ईमत्याज जी, श्री तिरुमावलवन थोल जी, श्री भगवंत मान जी, श्री रविन्द्रनाथ कुमार जी, श्री वीरेन्द्र कुमार जी, श्री रवि कुमार जी और श्रीमती प्रतिमा मंडल जी ने अपने विचार रखे । श्रीमती गीता जी ने संस्कृत में भाषण देकर इस सदन का गौरव बढ़ावा है । हमारे मंत्री श्री प्रताप सारंगी जी, युवा सदस्य श्रीकांत जी सहित लगभग 28 लोगों ने इस बिल पर बोला है । मुझे इस बात की खुशी है कि चाहे इधर के लोग रहे हों, चाहे उधर के लोग हों, लगभग सभी ने संस्कृत के गौरव को बढ़ाने की बात की है । संस्कृत की जो हमारी थाती है, उसका जो विशाल वैभव है, उसके बारे में न केवल विस्तार पूर्वक कहा गया, बल्कि इस बात की भी चिंता व्यक्त की गई कि यदि दुनिया के देशों में अगर इसको लेकर संजीदगी, जिज्ञासा और जिजीविषा है तो वे लोग उसको लेना चाहते हैं और आगे अपनी पीढ़ी को देना चाहते हैं । मैं समझता हूं कि शायद इसी के लिए सरकार ने यह कदम उठाया है । ये जो तीनों डीम्ड विश्वविद्यालय हैं, ये बहुत ही पहले से हैं । अब इनको विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया है, ताकि वे अपने पूरे गौरव के साथ अनुसंधान कर सकें, आगे बढ़ सकें, संस्कृत की स्टडी के लिए बाहर के बच्चों को यहां ला सकें और अपने बच्चों को बाहर भेज सकें ।

श्रीमन, मैं एक बात बहुत विनम्रता के साथ कहना चाहता हूं कि यह हमारा हिन्दुस्तान है । हम विश्व गुरु रहे हैं । छोटी-छोटी बातों को लेकर न तो यहां भाषा का विवाद है, न क्षेत्र का विवाद है और न ही जाति, पंथ और धर्म का विवाद है । मैंने पहले भी कहा कि सर्वे भवन्तु सुखिन: की बात करने वाला हिंदुस्तान, वसुधैव कुटुम्बकम की बात करने वाला हिुदस्तान, यदि वह अपने घर में ही छोटी बातों में उलझेगा, तो वह हिंदुस्तान नहीं हो सकता है । हिंदुस्तान तो सारे विश्व के लिए वह हिंदुस्तान रहा है, जिसने असतो मा सद्गमय की बात की है, जिसने असत्य से सत्य की ओर चलने की बात की है, जिसने मृत्योर्मा अमृतं गमय की बात की है, जिसने मौत से भी हटकर अमरत्व पाने की बात की है, जिसने तमसो मा ज्योतिर्गमय की बात की है, जिसने अंधकार को मिटाकर के प्रकाश की ओर चलने की बात की है, हम छोटी बात नहीं कर सकते हैं ।

यह जो संस्कृत की बात है, भाषा में लाकर इसको खड़ा करना, इससे ज्यादा दु:खद कुछ नहीं हो सकता है । यह भाषा की बात नहीं है । यह उस सम्पदा की बात है, जो भारत विश्व गुरु रहा है । मैंने शुरु में भी कहा कि एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:, स्वं स्वं चरित्रम् शिक्षरेन् पृथ्वियां सर्वमानव:, कोई तो बात रही होगी, जो सारी दुनिया के लोग यहां से आकर सीख कर जाते थे । भाषा की बात लाकर उसको उलझाना और छोटी बातों को करना, मैं बहुत विनम्रता से अनुरोध करना चाहूंगा कि हम सभी भारतीय भाषाओं को हर कीमत पर सशक्त चाहते हैं । हमारी सारी भारतीय भाषायें तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़, गुजराती, मराठी, बंगाली सहित जितनी भी भाषाएं है, 22 भारतीय भाषायें हैं, इन 22 भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी नहीं है । यह सबको समझ लेना चाहिए ।

हमारे संविधान में बाबा साहेब ने जो लिखा, मैं इस सदन के सामने उसे जरूर पढ़ना चाहता हूं । यहां उन्होंने भाषा के संबंध में कहा कि हिंदी राजभाषा होनी चाहिए । मैं धारा 351 को पढ़ना चाहता हूं कि उनके मस्तिष्क में संविधान बनाते समय संस्कृत के प्रति और भारतीय भाषाओं के प्रति कितना आदर था और उन्होंने कितनी गम्भीरता से इस बात को लिया । संविधान की धारा 351 में कहा है कि संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे,

जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और 8वीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौड़त: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें ।

श्रीमन्, हमारे प्रधान मंत्री जी ने कहा है कि हमारा धर्म हमारा संविधान है । संविधान से यह देश चलता है । मैं यह कहना चाहता हूं कि आज सभी भाषाओं में संस्कृत की जो शब्द सम्पदा है, वह दुनिया में सर्वाधिक है । इसमें कहीं किसी को कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि यह भाषा हमारी है । जो हमारी भारतीय भाषायें हैं, जब उन सभी भारतीय भाषाओं का विस्तार होगा, विकास होगा, तभी और भी भाषायें सशक्त हो सकती हैं । हम सभी भारतीय भाषाओं को सशक्त करने के पक्षधर हैं और हर कीमत पर उसको सशक्त करना चाहते हैं ।

श्रीमन् क्या यह सच नहीं है कि भास्कराचार्य जी के अद्भुत ग्रंथ आज पूरी दुनिया लेकर जा रही है? क्या उन ग्रंथों में ज्ञान और विज्ञान समाहित है, क्या उसको इस देश को नहीं पढ़ना चाहिए और क्या इस देश के लोगों को उस ज्ञान और विज्ञान को नहीं जानना चाहिए? क्या आर्य भट्ट को कोई नकार देगा? आर्य भट्ट ने जितना भी काम किया, उसके संस्कृत में ग्रंथ हैं । यदि गणित में शून्य को लेकर सारी दुनिया आर्य भट्ट को पढ़ा रही है, तो मेरी धरती पर आर्य भट्ट क्यों नहीं पढ़ना चाहिए । मुझसे जुड़ी हुई चीजों को, मेरी पीढ़ी को, मेरे देश की समृद्धता को बढ़ाने के लिए उसका उपयोग क्यों नहीं करना चाहिए? मैं समझता हूं कि जो भी ज्ञान हो, किसी भी भाषा में हो, जितनी भी मेरी भारतीय भाषायें होंगी, यदि उनमें ज्ञान का भंडार होगा, तो उसका उपयोग हमें हर हालत में करना है । केवल एक भाषा की बात नहीं है, संस्कृत विश्वविद्यालय बन रहा है इसलिए चर्चा हो रही है । इसे भाषा पर नहीं लाना चाहिए । क्या यह सही नहीं है, मुझे इस बात की खुशी है, पाणिनि जैसा व्याकरण दुनिया में कहां है? हम चुनौतीपूर्वक कहते हैं, दुनिया के लोगों को बताओ, हम अपने को संशोधन कर देंगे । यदि आपके पास पाणिनि से बड़ा कोई संस्कृत का व्याकरण है तो बताएं । जिस दिन आप हमको समझा देंगे, उस दिन हम अपनी बात को वापस ले लेंगे । इसमें क्या दिक्कत है । लेकिन कोई बताने को तैयार नहीं कि पाणिनि व्याकरण से दूसरा बड़ा कोई व्याकरण है । यदि इस देश का व्यक्ति पाणिनि के व्याकरण की बात करता है । दुनिया के विद्वानों ने पाणिनि और अन्य ग्रंथों के बारे में क्या कहा है? मेरे पास पचास-साठ पेजज पड़े हुए हैं, तीन सौ सालों से क्या-क्या बोला जा रहा है, कब-कब बोला जा रहा है, मैं उसका विवरण दे सकता हूं ।

श्रीमन, चरक संहिता को दुनिया पढ़ाए, आयुर्वेद के पीछे दुनिया के लोग आकर खड़े हैं । योग: कर्मसु कौशलम्, योग के पीछे आखिर कुछ बात तो होगी, यह बात सही है । हमारे कुछ वक्तओं ने भी कहा, यूनान, मिश्र और रोम सब मिट गए, लेकिन हम अब तक है, बाकी नामो निशां हमारा कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी, कुछ तो बात है । यह जो कुछ बात है, इसको बनाए रखने की जरूरत है । हमारी गवर्नमेंट इसके लिए कटिबद्ध है ।

हमारे प्रधान मंत्री जी ने सबका साथ, सबका विश्वास और सबका विकास कहा है, इसका मूल मंत्र इसी से होकर गुजरता है । हम सशक्त भारत की कल्पना करते हैं । जो सशक्त भारत हो, जो स्वच्छ भारत हो, जो समृद्ध भारत हो, एक भारत और श्रेष्ठ भारत हो । श्रेष्ठ भारत, जो पहले विश्वगुरू के रूप में विख्यात था, वही भारत फिर चाहिए । वह नरेन्द्र मोदी जी की ही अगुवाई में ही संभव हो सकता है और उसका रास्ता इधर से होकर गुजरता है । ...(व्यवधान)

मुझे खुशी है कि आज सौगत दादा सबसे ज्यादा खुश हैं क्योंकि सौगत दादा ने सबसे पहले कहा था कि देश में संस्कृत का विकास होना चाहिए । आज वह सबसे ज्यादा खुश हैं । मुझे इस बात की सबसे ज्यादा खुशी है कि वह सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं । ज्योतिष विज्ञान या वास्तुकला हो, वास्तुकला में भी श्रेष्ठता है, चाहे आयुर्वेद हो, चाहे वेद, पुराण, न्याय शास्त्र या नीति शास्त्र हो ।

19.38 hrs (Shri Kodikunnil Suresh *in the Chair*)

हम इसलिए इन विश्वविद्यालयों को बना रहे हैं कि भाषा के जितने भी ग्रंथ हैं, उनमें ज्ञान और विज्ञान है । उसको यह पीढ़ी नए अनुसंधान के साथ पढ़े । मुझे इस बात का अफसोस है, मैं उनका नाम नहीं लेना चाहता ।

यह लिखा हुआ है कि विज्ञान के साथ आगे बढ़ें, इनको पता नहीं है कि इन ग्रंथों में कौन सा विज्ञान नहीं छिपा है । दुनिया के जितने भी बड़े-बड़े वैज्ञानिक हुए हैं, उन्होंने उसका संदर्भ दिया है । यह ज्ञान-विज्ञान छपा है । इसे केवल पढ़ना

नहीं है, मैं जिसकी बात कर रहा हूं, वे सब ग्रंथ चाहे वह न्याय हो या नीति हो, चाहे पराशर मुनि के बारे में कहा था, उससे बड़ा कृषि विज्ञान क्या होगा । भरत मुनि से बड़ा नाट्य शास्त्र क्या होगा । ये जितने भी हैं, इन विश्वविद्यालयों को, उस रूप में हमारी प्राचीन सम्पदा विकसित करके, हम आगे बढ़ा सकें, उसे नवाचार के साथ ला सकें । जो उसमें ज्ञान-विज्ञान है, उसे नए परिप्रेक्ष्य में अनुसंधान करके हम आगे बढ़ सकें । यदि मैं सभी माननीय सदस्यों का अलग-अलग उत्तर दूं, मेरे पास सभी के उत्तर हैं । यदि आप इजाजत दें, तो मैं एक-एक करके उत्तर देता हूं । अब यदि जरूरत नहीं है तो कहना चाहता हूं कि मैं इस पूरे सदन का आभार प्रकट करना चाहता हूं, जिन्होंने इस बिल के समर्थन में बोला है ।

दूसरा, मैं भारतीय भाषाओं के सशक्तिकरण के लिए आश्वासन देता हूं । यह सरकार चाहे तमिल हो, तेलुगु हो, मलयालम हो, कन्नड़ हो, गुजराती हो, मराठी हो, बंगाली हो सारी भाषाओं को हम सशक्त करेंगे । लेकिन, मैं आपके माध्यम से राजा जी से कहना चाहता हूं कि जो तमिल परिषद् के बारे में कहा है, एक और माननीय सदस्य ने बहुत अच्छा कहा कि इतने समय से निदेशक नहीं है । तमिल भाषा का जो परिषद् है, उसके अध्यक्ष माननीय मुख्य मंत्री होते हैं । यह केवल तमिल भाषा पर ही है । मेरे से पहले मंत्री जी ने और मैंने इस संबंध में तीन पत्र दिए हैं । पिछले तीन सालों से उस कमेटी का गठन नहीं हुआ है । चूंकि इसमें उनकी अध्यक्षता है, वह गठन करेंगे तभी यह आगे बढ़ेगा । मैं आपको आश्वस्त करता हूं कि आप उसका गठन कीजिए तमिल भाषा के लिए जो संभव हो सकता है, वह हम करेंगे ।...(व्यवधान) लेकिन तीन सालों से गठित नहीं है । मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं कि हम भारतीय भाषाओं के सशक्तिकरण के पक्षधर हैं । हम भारत को महान बनाना चाहते हैं । भारत तभी महान बनेगा, जब हमारी ये भाषाएं सशक्त होंगी और सबल होंगी । मैं प्रेमचन्द्रन से कहना चाहता हूं, ये सबसे सीनियर व्यक्ति हैं । आपने जो सात बिन्दु उठाए हैं, ये लगभग सभी विश्वविद्यालयों की भाषा है । अगर हम इसको नहीं डालते तो आप खड़े होकर जरूर कहते कि आपने यहां क्यों नहीं लिखा कि यह विश्वविद्यालय सभी वर्गों के लिए, सभी जातियों के लिए, सभी पंथों के लिए खुला होगा । यदि किसी के मन में थोड़ा भी संदेह होगा तो वह धुल जाएगा ।

SHRI N. K. PREMACHANDRAN : We are fully supporting it.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक : आपका बहुत-बहुत धन्यवाद । मैं एक बार फिर सबका आभार प्रकट कर रहा हूं । ... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON : Let him complete.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक : आज जब दादा बोल रहे थे तो 'गीता' पर चले गए थे, आत्मा से परमात्मा पर चले गए थे । दादा ने कहा

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥"

उन्होंने यह भी कह दिया कि- "*वासांसि जीर्णानि* यथा विहाय ।" गीता किसी धर्म और जाति का नहीं है, गीता तो दर्शन है । यह आत्मा का परमात्मा से जोड़ने का और 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' का है । इसलिए मैं उनको भी बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं ।

सभापति महोदय, मैं आपका भी आभार प्रकट करना चाहता हूं और सारे सदन से अनुरोध करना चाहता हूं कि वे ध्वनिमत से इस बिल का समर्थन करें । बहुत-बहुत धन्यवाद ।

HON. CHAIRPERSON : The question is:

"That the Bill to establish and incorporate Universities for teaching and research in Sanskrit, to develop all-inclusive Sanskrit promotional activities and to provide for matters connected therewith or incidental thereto, be taken into consideration."

The motion was adopted.

HON. CHAIRPERSON : Now the House will take up clause-by-clause consideration of the Bill.

Clauses 2 to 47

HON. CHAIRPERSON : The question is:

"That Clauses 2 to 47 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clauses 2 to 47 were added to the Bill.

First Schedule

HON. CHAIRPERSON : Shri Abdul Khaleque, are you moving the amendment?

श्री अब्दुल खालेक : मैंने पहले ही कहा था कि असम के प्रागज्योतिषपुर और कामरूप में संसकृत की बहुत चर्चा होती है । मैं मंत्री से आग्रह करूंगा कि अगर वे असम में स्पेशिएली बोजाली कैम्पस में एक नया यूनिवर्सिटी बनाएंगे, अगर मंत्री जी खड़ा होकर कुछ बोलेंगे तो ।

HON. CHAIRPERSON : Are you moving the amendment or not?

SHRI ABDUL KHALEQUE : Sir, I beg to move:

Page 16, *after* line 15, insert,-

"12. Assam Bojali campus of Barpeta District.". (1)

HON. CHAIRPERSON: I shall now put amendment No. 1 to First Schedule moved by Shri Abdul Khaleque to the vote of the House.

The amendment was put and negatived.

HON. CHAIRPERSON : The question is:

"That First Schedule stand part of the Bill."

The motion was adopted.

First Schedule was added to the Bill.

Second Schedule was added to the Bill.

Clause 1, the Enacting Formula, and the Long Title were added to the Bill.

HON. CHAIRPERSON : Now, the Minister may move that the Bill be passed.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक: महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि विधेयक पारित किया जाए ।"

HON. CHAIRPERSON: The question is:

"That the Bill be passed."

The motion was adopted.

HON. CHAIRPERSON: Now, the House will take up '*Zero Hour*'.

Shri Basanta Kumar Panda.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Hon. Members, please maintain order in the House.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Now, the House has taken up '*Zero Hour*'.

… (*Interruptions*)

श्री बसंत कुमार पांडा (कालाहाण्डी) : माननीय सभापति महोदय, मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूं । मेरे क्षेत्र में एक व्यावसायिक गांव है, नगर है – केसिंगा, जहां पर रेलवे स्टेशन अंग्रेजों के जमाने का बना है । नेशनल हाइवे-57 - बरगढ़ से बोरीगुमा उसी रास्ते से निकलता है और ट्रेन्स के आवागमन के कारण, मालवाही ट्रेन्स के आवागमन के कारण घण्टे-घण्टे भर वहां लेवल क्रॉसिंग बन्द रहती है । इसके लिए वहां पर एक आरओबी मंजूर हुआ था, उसका टेंडर भी हुआ था, लेकिन किसी कारणवश वह टेंडर कैंसिल हो गया ।

HON. CHAIRPERSON: Hon. Members, please sit down in your seats.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Mr. Panda, please continue your submission.

… (*Interruptions*)